# अन्तरा शब्दशक्ति

मासिक वेब पत्रिका

अंक 7 जनवरी 2018

## नववर्ष विशेषांक

सेन्स समूह का उपक्रम www.antrashabdshakti.com

**संस्थापक एवं संपादक**

प्रीति समकित सुराना

**प्रबंधन संपादक**

डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'

**सहयोगी एवं सलाहकार**

समकित सुराना

मनोज जैन 'मधुर'

ब्रजेश शर्मा 'विफल'

कैलाश बिहारी सिंघल

देवेंद्र सोनी

कीर्ति वर्मा

पिंकी परुथी 'अनामिका'

**वेबसाइट**

www.antrashabdshakti.com

**ईमेल**

antrashabdshakti@gmail.com

**फेसबुक पेज**

https://www.facebook.com/www.antrashabdshakti/

**फेसबुक समूह**

https://www.facebook.com/groups/989086901140447/

## अनुक्रमणिका


**संपादकीय**

प्रीति समकित सुराना 5

**पाठकीय समीक्षा**

डा० भारती वर्मा बौड़ाई 8

**गीत-नवगीत**

राधा गोयल 10

मनोज जैन मधुर 11

अनुपम आलोक 12

गोप कुमार मिश्र 13

अमरेश सिंह भदोरिया 14

अवधेश कुमार 'अवध' 15

**मदिरा सवैया**

मेघा योगी 17

**गीतिका**

अलका गुप्ता 18

**ग़ज़ल**

गुलशन प्रेम 19

ब्रजेश शर्मा विफल 20

लक्ष्मी खन्ना ' सुमन' 21

**दोहे**

विनोद तिवारी 'मानस' 22

आदित्य राजौरिया "अजनबी" 23

**मुक्तक**

वंदना दुबे , धार 24

अलका चौधरी 'अनमोल' 25

**हाइकु**

मान सिंह 'मनहर' 26

राजन सिंह 27

चंचल पाहुजा 28

**कविता**

अनु चक्रवर्ती 29

कैलाश बिहारी सिंघल 30

कीर्ति प्रदीप वर्मा 31

कैलाश मंडलोई 'कदंब' 32

मीनाक्षी सुकुमारन 33

**कहानी**

देवेंन्द्र सोनी 34

**लघुकथा**

नमिता दुबे 36

हेमंत बोर्डिया 37

सीमा अग्रवाल 38

**आलेख**

अर्पण जैन "अविचल"

**तर्क के आरोहण के बाद बनेगा हिन्दी राष्ट्रभाषा का सूर्य** 39-41

पिंकी परुथी 'अनामिका'

**आचार्य और विद्यार्थी के संबंध में नैतिक मूल्य** 42-47

**रिपोतार्ज: रोहित त्रिवेदी**

'हिन्दी के सम्मान के लिए 'शिक्षालय की ओर हिन्दीग्राम' 48-49

**संस्मरण;-**

"कवि रघुवीर सहाय"

(संदर्भ :- 9 दिसंबर जन्म दिवस)

लेखक :-राजेश कुमार शर्मा"पुरोहित" 50-51

**साक्षात्कार**

रचनाकार - आशा पाण्डे ओझा

प्रस्तुतकर्ता - प्रीति 'अज्ञात' 52-63

**पुस्तक समीक्षा**

समीक्षित पुस्तक – "रंग ज़िन्दगी के"

लेखक - मुकेश दुबे

समीक्षक- सूरज मल रस्तोगी 64-65

**फरवरी 2018 अंक 7 हेतु रचनाएँ antrashabdshakti@gmail.com पर आमन्त्रित हैं।**

## परवाह किसकी और क्यों???

**प्रीति समकित सुराना**

समय और इंसान का चोली-दामन का नाता है,..इंसान जन्म लेता है तब लोग समय देखते हैं,इंसान जब तक जीता है हर समय समय देखता है और इंसान मरता है तब फिर लोग समय देखते हैं,...

हर बात ,हर काम ,हर परिस्थिति, हर जरुरत ,हर कर्तव्य और हर अधिकार के लिए समय का इंतजार,...तो कभी अच्छे दिनों का इंतजार,..।परवाह, चिंता, फ़िक्र,...।और साथ ही जाने कितने इल्ज़ाम,..जैसे:- समय ख़राब है,..समय ही गलत है,..जाने सही समय कब आएगा,.. सही समय कभी समय पर नहीं आता,...आदि इत्यादि,...

पर मुझे ऐसा लगता है कि हमारी इच्छाएं ही ऐसी होती हैं जो समय के अनुरूप नहीं होती,..बच्चे जब पैदा होते हैं तब से शुरू होते हैं इंतजार का सिलसिले,..बच्चे की पहली मुस्कान का,..पहले कदम का,.पहले शब्द का,..स्कूल के पहले दिन का,. फिर बच्चे के बड़े होने का,..परीक्षा का,..परिणाम का,.. जवानी का.. काम का,..शादी का,..फिर खुद के परिवार का,... जिम्मेदारियों के निर्वाह का,..और अंततः वृद्धावस्था में जीवन यापन,.और फिर मृत्यु,...हर अवस्था के लिए हम पहले से ही इंतजार करते हैं,.. हर वक़्त आने वाले कल और आने वाले पल के इंतजार में गुजरता है,..

कभी सोचती हूं कि क्यूं नहीं हम वर्तमान में जीते,..? क्यूं नहीं होता हमारा प्रयास की जो आज है उसे जी भर कर जी लिया जाए,... ? पर जानती हूं "कहना आसान है करना कठिन",..जब समय अपनी फितरत नहीं बदलता तो इंसान अपनी आदत कैसे बदले??

समय की फितरत यही है वो कभी रुकता नहीं है,
समय की आदत यही है वो कभी झुकता नहीं है,
इंसान की जरुरत है रुकना-चलना और इंतज़ार करना,
समय की मंज़िल नहीं है और वो कभी थकता नहीं है,...

मुझे ऐसा लगता है कि न बदले समय अपनी आदत या फितरत तो न सही,..कुछ आदतें इंसान को बदल लेनी चाहिए,..।आने वाले समय का इंतजार करते हुए उतावलापन न दिखाते हुए थोड़ा संयमित और संतुलित रहना चाहिए,.. बच्चों के भविष्य की परवाह करते हुए भी हम बच्चों को उनका बचपन जीने दें,.. बल्कि हम खुद बच्चों के साथ उनका बचपन जियें,..क्योंकि समय तो अपनी गति से चलेगा ही ये तय है,..बच्चा अपनी उम्र के अनुसार बढ़ेगा ही,.. हम अपनी अपक्षाओं का अतिरिक्त बोझ लादकर न केवल उनका वर्तमान बोझिल बनाते हैं बल्कि अपना आज भी

चिंता से भर लेते हैं,... ये बिलकुल वैसा ही है जैसे परीक्षा की चिंता में पढ़ाई भी नहीं कर पाए और परीक्षा परिणाम कि फ़िक्र में छुट्टियां भी एन्जॉय नहीं कर पाए,...अगर आने वाले कल की फ़िक्र कुछ यूं करते कि बेहतर परिणाम के लिए जब समय मिला था तब अच्छी से अच्छी तैयारी करते और परीक्षा के बाद परिणाम आने तक छुट्टियों का मज़ा निश्चिन्त होकर उठाते,..
अकसर अपने आसपास ये देखा है कि बचपन में समय बहुत होता पर समय के सामन्जस्य और सदुपयोग की समझ नहीं होती,..जवानी में समझ और क्षमता दोनों पर्याप्त होती है पर भविष्य की बड़ी-बड़ी योजनाओं के चलते लोग अपने जीवन का वो समय जब पैसा भी था शारीरिक क्षमता भी सिर्फ भविष्य के निर्माण लिए व्यतीत करते है,.. जिस मकान गाड़ी और पूंजी का संग्रह वृद्धावस्था के लिये किया जाता है जब वास्तव में उसके उपभोग के लिए समय मिलता है तब तक तनावयुक्त जीवन शैली के कारण शारीरिक क्षमता इतनी क्षीण हो जाती है कि घर से ज्यादा अस्पताल में रहना पड़ता है,..घूमने से ज्यादा गाड़ी का उपयोग अस्पताल जाने के लिए होता है और नियोजित पूंजी का व्यय भी सिर्फ अस्पताल के लिए होता है,..
ध्यान रहे मैंने सिर्फ एक उदाहरण दिया है,..ऐसा सब के साथ हो यह जरुरी नहीं है,..पर समय रहते इन उदारहणों से हम सचेत हो कर भविष्य में जब पैसा और समय होगा तब क्षमता न होने की वजह से दुखी होने की बजाय आज अपने दैनिक जीवन में जरा सा परिवर्तन और समय का सही नियोजन करके आज को बेहतर और कल को चिन्ता मुक्त रखने की कोशिश कर सकते हैं,.,..
मैं अपनी सोच किसी पर थोपने की पक्षधर नहीं हूं यहां मैं सिर्फ अपनी सोच आप सबके सामने रख रही हूं,.. समय का चक्र अपनी गति से चल रहा है या यूं कहें कि भाग रहा है,.. अक्सर इधर-उधर कहीं न कहीं, किसी न किसी से ये सुनने को मिलता है कि क्या करें समय ही नही मिलता,. वास्तव में हम निरंतर गतिमान समय के साथ कदम से कदम मिला कर चल ही नही पाते और पीछे रह जाते हैं,.. समय जैसी मूल्यवान संपदा का भंडार होते हुए भी हम हमेशा उसकी कमी का रोना रोते रहते हैं क्योंकि हम इस अमूल्य समय को बिना सोचे समझे खर्च कर देते हैं,..
पर मुझे फ़िक्र है अपने आने वाले कल की, चिंता करती हूँ आपातकालीन परिस्थितियों से निबटने के लिए तैयार रहने की, मैं परवाह करती हूँ अपनी और अपनों की इसलिए आज मैंने ये तय किया है आज से मैं अपनी दैनिक दिनचर्या में बिना किसी विशेष परिवर्तन के हर घंटे दो मिनट की बचत करूंगी,..ठीक वैसे ही जैसे अपनी क्षमतानुसार अपने आय-व्यय के बाद बचाती हूं भविष्य के लिए नाममात्र भविष्य निधि,..क्योंकि आय कम है और व्यय अधिक इसलिए कभी कभी इस जमा निधि का उपभोग या आहरण आकस्मिक कार्यों की व्यवस्था में कर लेती हूं,....इस तरह प्रतिदिन बचेंगे अड़तालीस मिनट जिसे मैं जमा करूंगी भविष्य निधि की तरह और बीच बीच में जरुरत और परिस्थिति के अनुसार आहरित करूंगी,.. ताकि जो काम अकसर समय न होने के कारण छूट जाते हैं,..वो समय दूंगी खुद को निखारने और संभालने में,..वो समय व्यतीत करूंगी अपने अपनों के साथ,... हो सकता है कल मेरे समय नियोजन की सफलता से प्रेरित होकर

मेरे अपने भी मेरे लिए समय निकालें,...।
सिर्फ एक बात और साझा करना चाहूंगी
सबसे,..मुझे आज फिर ज़रुरत महसूस हो रही है,..
आज करे सो कल कर, कल करे सो परसों।
इतनी भी क्या जल्दी है,जीना है अभी बरसों।।
इस मानसिकता को फिर से पुरानी सोच में
बदलना होगा,..क्यूंकि आदर्श अनुभव की कसौटियों
पर कसे जाने के बाद ही स्थापित होते हैं,..आज
फिर से मन इस सोच पर चलना चाहता है कि,..

काल करे सो आज कर,आज करे सो अब।
पल में परलय होएगी, बहुरि करेगा कब।।
अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए आप सब से
शुभकामनाओं की अपेक्षा है,..

डॉ. प्रीति सुराना
संस्थापक- अंतरा शब्दशक्ति
उपाध्यक्ष- मातृभाषा उन्नयन संस्थान
प्रबंध संपादक- मातृभाषा. कॉम

## पाठकीय समीक्षा

**डा० भारती वर्मा बौड़ाई**

**अंतरा-शब्दशक्ति वेबपत्रिका (अंक ६) दिसंबर-२०१७**

अंतरा शब्द शक्ति वेब पत्रिका के छठे दिसंबर अंक के मुखपृष्ठ ने मन मोह लिया। किताबें कितनी महत्वपूर्ण हैं जीवन में..यही तो बता रहा है यह आकर्षक मुखपृष्ठ।

संपादकीय से आरंभ करूँ तो अक्सर संपादकीय बड़े बोझिल और उबाऊ लगते हैं.... सपाट से प्रभावहीन, पर यहाँ प्रीति सुराना भावों से लबालब, आत्मीयता से परिपूर्ण अपने हर संपादकीय में किसी एक सवाल को उठा कर उसका बारीकी से विश्लेषण करती चलती हैं, उसके हर पहलू पर दृष्टि डालते हुए चलती हैं और कलम उनकी तभी रुकती है जब वे पूर्णतया विश्लेषण से संतुष्ट हो जाती हैं। कभी- कभी सम्पादकीय मन को प्रभावित नहीं कर पाते, पर यहाँ ऐसा नहीं है। यहाँ सरसरी दृष्टि डालते हुए पृष्ठ दर पृष्ठ पलटते जाना संभव नहीं है और इसके लिए प्रीति सुराना की प्रशंसा न करना कृपणता ही होगी।

यह छठा अंक है और हर अंक पहले वाले अंकों से निखर रहा है इसमें किंचित भी संदेह नहीं। नए और पुराने स्थापित रचनाकारों की रचनाओं से सजा यह अंक भी साहित्य जगत में दस्तावेज़ बनने की ओर अग्रसर है।

पाठकीय प्रतिक्रिया से लेकर साहित्य की हर विधा को अपने में समेटे हुए यह अंक प्रभावी बन पड़ा है। गीत नवगीत में अपने रंग बिखेरते कैलाश सोनी सार्थक, डा० श्याम मनोहर सिरोठिया, मनोज जैन ‘ मधुर’, माँ की ममता से अभिसिंचित करते डा० अशोक गौतम, किशोर पारीक ‘किशोर’ के गीत की अंतिम चार पंक्तियों का तो कहना ही क्या.... सभी एक से बढ़ कर एक। मुक्तक, ग़ज़ल और नज़्म में भावविभोर करती श्वेता सिंह, नीता ससक्सेना, राजेश पुरोहित, बंटी दुबे ‘गीत’, सुनिता लुल्ला, शिरिन भावसार, कैलाश बिहारी सिंघल ‘केसू’, तो सीधे दिल पर वार करती, सार्थक संदेश देती अंधविश्वास, सीख रक्तदान की, आत्मविस्मृति, परिचय जैसी लघुकथाएँ अंक की जान हैं तो जयराम जय, कुमार रवीन्द्र के दोहे, पूनम राजेश तिवारी, नीरजा मेहता के हाइकु और कविताएँ शान हैं।

बच्चों के लिए रचा अच्छा साहित्य बहुत काम देखने में आता है। बच्चों के लिए लिखने वाले रचनाकार भी बहुत कम दिखाई देते हैं। ऐसे में कीर्ति प्रदीप वर्मा, राजेंद्र श्रीवास्तव , राजश्री तिवारी पांडेय इस कमी को पूरा करते दिखाई देते हैं। सुहानी रुसिया की नन्हीं कलम एक सुखद अहसास से भरती है।

डा॰ अर्पण जैन अविचल का संस्मरण आँखों के सामने एक जीवंत चित्र सा उकेरता प्रतीत होता है। कहीं- कहीं जैसे उनका कवि भी उभर कर सामने आने को तैयार रहता है। इस अंक की यह महत्वपूर्ण उपलब्धि है। रिपोर्ताज, साक्षात्कार, पुस्तक समीक्षा, अनुवाद सभी कुछ तो है इसमें......तो डायरी विधा क्यों अछूती रहे?

इस अंक में अपनी सहभागिता न कर पाने के कारण अंक में शामिल न हो पाने का दुःख तो है पर इतने अच्छे अंक को पढ़ कर जिस सुख और आनंद की अनुभूति हुई...वह कहीं अधिक है। कुल मिला कर कहूँ तो एक आत्मीयता पूर्ण काव्य संग्रह को पढ़ने की अनुभूति देता हुआ सा संग्रहणीय अंक।

हाँ....लेखन अपना मौलिक हो, कहीं से लिया हो तो साभार लिखा हो... यह ध्यान तो रखना ही होगा।

**डा॰ भारती वर्मा बौड़ाई**

## गीत-नवगीत

## "राष्ट्रभाषा की वेदना"

**राधा गोयल**

अंग्रेजी के दत्तक पुत्रों, आज रो रही भारती
कोख से जिसकी जन्म लिया, वह माता आज पुकारती
आज रसातल को जाता है मेरा भारत देश
मेरे बच्चों भूल गये तुम, क्यों अपना परिवेश

खान-पान और रहन-सहन, बोली भी हुई विदेशी
मेरे बच्चों मुझको ही तुम लगते हो परदेशी
कोख से मेरी जन्म लिया, हा!मेरी कोख लजाई
अपने ही बच्चों को, मैं लगती हूँ आज पराई

जिस भाषा में तुतलाये, तुम भूल गये वो भाषा
दूध कलंकित किया मेरा, टूटी सारी अभिलाषा
क्या स्वरूप गंदा मेरा, जो धक्का मुझे दिया है
किसी दूसरे की माता को घर में स्थान दिया है।

जिसने जन्म दिया, पाला, उसका अपमान किया है
जिसने केवल गोद लिया, उसका सम्मान किया है
इसीलिये मेरे अंतर में, आज जल रही ज्वाला
मेरे ही पुत्रों ने दी है, अपमानों की हाला

अंतर में जो आग जल रही, कैसे उसे बुझाऊँ?
देश निकाला दिया सुतों ने, ठौर कहाँ अब पाऊँ??
ठौर कहाँ अब पाऊँ?

**राधा गोयल**

## गीत-नवगीत

## नये साल में हम

**मनोज जैन मधुर**

चलो अब शपथ लें,
नये साल में हम।

किसी को यहाँ पर
न कोई छलेगा।
नहीं चाल कोई
सियासी चलेगा।
विषमता न रौंदे
पकड़कर किसी को,
नहीं वक्ष पर मूँग
कोई दलेगा।
रखे रब रहेंगे
उसी हाल में हम।

दिलों से अंधेरा
निकालें भगाएं।
उजारें दीये फिर
दिवाली मनाएं।
जड़ों से उखाड़ें
मरी मान्यताएं,
मनुज सुप्त हैं जो
उन्हें हम जगाएं।
मिलाएंगे काला
नहीं दाल में हम।

दिखाई हमें दे
सभी में भलाई।
चलो दें बढ़ावा
पकड़कर कलाई।
गिरों को उठायें
सुपथ पर चलाएं,
न झगड़ा कहीं हो
न हो अब लड़ाई।
फँसायेंगे मछली
नहीं जाल में हम।

दया नेह करूणा
की दुनिया बनाएं।
सुभद भावनाओं के
दीपक जलाएं।
नहीं हो निराशा
कहीं भी धरा पर,
नई आस का एक
सूरज उगाएं।
रखें ढाई आखर को
रूमाल में हम।

**मनोज जैन मधुर**

## गीत-नवगीत

## नववर्ष तुम्हारा अभिनंदन

**अनुपम आलोक**

नववर्ष तुम्हारा अभिनंदन । नववर्ष तुम्हारा अभिनंदन ।
तुम प्रखर पुंज जिज्ञासा के -
तुम आशाओं की आशा हो ।
जन-मन ने जिन्हें संजोया है -
उन स्वप्नों की परिभाषा हो ।
कुछ दीन अधर के प्रश्नों का,
वांछित तुमसे उत्तर श्रीमन । नववर्ष तुम्हारा अभिनंदन ।
हे अभ्यागत!अंतस मेरे -
कर्तव्य बोध से रीते है ।
नैतिकता सारी भूल चुके -
बस स्वार्थ समर में जीते हैं ।
है अहं रक्त के कण-कण में,
न शेष प्रेम का स्पंदन । नववर्ष तुम्हारा अभिनंदन ।
हे आगत! आना..आँचल में -
कुछ राष्ट्रधर्म की थाती ले ।
अंतस के सुप्त विचारों हित -
शुचि ज्ञान दीप की बाती ले ।
मानवता हुई तिरोहित अब,
है जन,गण,मन करता क्रंदन । नववर्ष तुम्हारा अभिनंदन ।

**अनुपम आलोक**

## गीत-नवगीत

## कृष्ण की बाँसुरी

गोप कुमार मिश्र

कृष्ण की बाँसुरी
तो बजी रात दिन,
श्वाँस कब कर सकी, प्रेम का अनुसरण

चाँद पीता रहा ,
चाँदनी का ज़हर।
डूबते नाँव में,
नद ,भँवर के भँवर।।
भाव लगते रहे ,
भाव जानें बिना ,
भाव छलते रहे मोम -सा आचरण।

वो समझ कब सके ,
हिय कही -अनकही ।
ढल गयी रूप यौवन ,
चपल- माधुरी।।
मै सुनाती रही ,
प्रेम की रागिनीं ,
लोग पढते रहे ,देह का व्याकरण ।

एक पछुवा चली ,
पात चिंगारियाँ।
वो जलाते रहे,
केसरी क्यारियाँ।।
सूर्य जब- जब ढ़ला ,
आसमाँ रो पड़ा,
यामिनी मनचली , सोम-रस की शरण।

**गोप कुमार मिश्र**

**गीत-नवगीत**

# बदरी बहुत घनी है

**अमरेश सिंह भदोरिया**

समृद्धि के सिर पर ईमान की छतरी तनी है।
बदरी बहुत घनी है, बदरी बहुत घनी है।

आँखों से कुछ दृष्टिहीन
हाथों। से थामे दूरबीन
देख रहे हैं दूर क्षितिज को
भेद रहे पहचान परिधि को
रेगिस्तान की रेती में
ढूंढते शाम शबनमी है।
बदरी बहुत घनी है, बदरी बहुत घनी है।

ऋतुओं में आयी विकृतियां
रूप बदलती हैं आकृतियां
कोयल मौन बोलते दादुर
तरुणाई कुछ है सृजनातुर
आसमानी कैनवास पर
धुंधली सी तस्वीर बनी है।
बदरी बहुत घनी है, बदरी बहुत घनी है।

कलम लिख रही है परिहास
सच को कौन बधाये आस
इंद्रधनुष में रंग नए है
शोषण के सब ढंग नए है
गोल-गोल काले छल्लों सा
धुआँ उगलती चिमनी है।
बदरी बहुत घनी है, बदरी बहुत घनी है।

आँचल में ममता मज़बूर
और भी बदल गए दस्तूर
नियति ने बदला है इरादा
सिसकियां भरती मर्यादा
कथनी-करनी में "अमरेश"
अस्तित्व की ठना-ठनी है।
बदरी बहुत घनी है, बदरी बहुत घनी है।

**अमरेश सिंह भदोरिया**

## गीत-नवगीत

## साल पुराना था

**अवधेश कुमार 'अवध**

खट्टी-मीठी यादों का वह,केवल एक खजाना था ।
कभी हँसाने,कभी रुलाने वाला साल पुराना था ।।

कभी पिता बनकर दुलराया, माता बनकर पाला भी।
गुरुवाणी सम राह दिखाया, बना कभी वह हाला भी।
माना जीवन बहुत कठिन पर, उससे भी याराना था।
खट्टी-मीठी यादों का वह,केवल एक खजाना था।
कभी हँसाने,कभी रुलाने वाला साल पुराना था ।।

जी एस टी के सँग तलाक का, मुद्दा भी गरमाया था।
माता ने अपने बेटे को, खुद सेहरा पहनाया था ।
पार्टी का यह चलन पुराना, रूप बदलकर आना था।
खट्टी-मीठी यादों का वह,केवल एक खजाना था।
कभी हँसाने,कभी रुलाने वाला साल पुराना था ।।

कश्मीरी वादी में फिर से , नफ़रत के अंगारे थे ।
साँप - सपोले आतंकी फिर, देशभक्त से हारे थे ।
गद्दारों का पाकिस्तानी, टूटा राग तराना था ।
खट्टी-मीठी यादों का वह,केवल एक खजाना था।
कभी हँसाने,कभी रुलाने वाला साल पुराना था ।।

वेंकय्या, कोविंद देश के, प्रथम नागरिक बन आए।
मोदी - योगी मिल करके फिर, भगवा झंडे लहराए।
पुन: गरीबी हार गई थी, जनगण मन भटकाना था।
खट्टी-मीठी यादों का वह,केवल एक खजाना था ।
कभी हँसाने,कभी रुलाने वाला वर्ष पुराना था ।।

गौ माता खूँटे पर मरती, खड़े कसाई हँसते थे ।
रक्षा का यह देख छलावा, छली व्यंग से डँसते थे।
लोकतन्त्र में मतदाता को, लॉलीपॉप चटाना था ।
खट्टी-मीठी यादों का वह,केवल एक खजाना था ।
कभी हँसाने,कभी रुलाने वाला साल पुराना था ।।

भूमिपुत्र की दशा न सुधरी, रोजगार केवल सपना।
महँगाई आपे से बाहर, बाहर कुलभूषण अपना ।
जौहर को अपमानित कर,संजय को माल कमाना था।
खट्टी-मीठी यादों का वह,केवल एक खजाना था।
कभी हँसाने,कभी रुलाने वाला साल पुराना था ।।

कुछ विकास के दावे सच थे, कुछ कोरे लफ्फाजी थे।
मर्यादा को हरने वाले, बाबा फॉदर काजी थे ।
भेद नहीं शिक्षा - भिक्षा में, बदला नहीं जमाना था।
खट्टी-मीठी यादों का वह,केवल एक खजाना था।
कभी हँसाने,कभी रुलाने वाला साल पुराना था ।।

बेटी अब भी मारी जाती, बहुएँ जलतीं आगों में ।
बदले केवल नाम पुराने, कमी नहीं कुछ दागों में।
अच्छे दिन के इंतज़ार में, सत्रह हुआ रवाना था ।
खट्टी-मीठी यादों का वह,केवल एक खजाना था।
कभी हँसाने,कभी रुलाने वाला साल पुराना था ।।

**अवधेश कुमार 'अवध'**

## मदिरा सवैया

**मेघा योगी गुना म. प्र.**

आज दिखा जब रूप मनोहर;
आन बसी वह आँखन में!!

नीर भरी गगरी धर मस्तक;
बाजत पैंजन पाँवन में!!

चाल चले वह नागिन सी जब;
आग लगाबत कानन में!!

भूल सुरा मद ज्ञान गया सब;
बोल न आबत आनन में!!

रूप अनूप सुधाकर माँगत;
देखत ओजस अंगन को!!

घूँघट ओट छिपा मुख मंडल;
तीर चलाबत नैनन को!!

पाँव धरो जब बाहर केतन;
बूँद लगा कर अंजन को!!

प्रेम फुहार झरा रमणी अब;
दास हिया मम किंचन को!!

**मेघा योगी गुना म. प्र.**

## गीतिका

**अलका गुप्ता**

तम में खोजें ..गात क्या है !
बूझें ..अंतर.. ज्ञात क्या है !!

चाँद .. धुंधला.. हो गया है !
सितारों की बिसात क्या है !!

हों जिससे ..मज़बूत रिश्ते...
फिजूल तज दें बात ..क्या है !!

सुर और राग वही हैं फ़िर...
बदले सब.. हालात क्या है !!

बहता रक्त..रगो से ..पूछे...
मानवता तिरि जात क्या है!!

आती जाती..दुनियाँ यहाँ !
जुड़े न .. कुइ सौगात क्या है !!

खंडित ..अहंकार 'भारती' !
ठगे घात-प्रतिघात क्या है !!

**अलका गुप्ता**

**ग़ज़ल**

**गुलशन प्रेम**

मैं ख़ुद से ही बग़ावत कर रहा हूं
मगर तुमसे मोहब्बत कर रहा हूं

ख़ुदा से कम नहीं मेरे लिए वो
उसी की मैं इबादत कर रहा हूं

आज फिर दिल उदास है मेरा
आज फिर मैं शरारत कर रहा हूं

कहा था तुमने मुझसे ना मिलो तुम
उसी की मैं इताअत कर रहा हूं

ज़मीनों पर तो क़ब्ज़ा आपका है
दिलों पर मैं हुकूमत कर रहा हूं

खड़ा हूं दार पर फिर भी ऐ गुलशन
मैं सच कहने की हिम्मत कर रहा हूँ

**गुलशन प्रेम**

## ग़ज़ल

**ब्रजेश शर्मा विफल**

कुछ भी सोचा न समझा ख़फ़ा हो गये,
दो क़दम साथ चलकर जुदा हो गये ।

जाने कैसे मरासिम हैं उनसे मेरे,
क्यूँ मेरे हक़ में ख़ुद वो दुआ हो गये ।

हँस के सह ली जो मैंने ज़रा बेरुखी,
तुम ये समझे के तुम तो ख़ुदा हो गये ।

आशना जब भी बरहम हुए तो लगा,
मेरे ज़ख्मों की ख़ातिर दवा हो गये ।

शोर सुनते हैं अच्छे दिनों का बहुत,
अच्छे दिन तो कभी के हवा हो गये ।

मयक़दे के निराले हैं जग से उसूल,
रिन्द सब वाइज़ों की अदा हो गये ।

खुद ब खुद साँस से साँस उलझी रही,
हम नफ़स के क़फ़स से रिहा हो गये ।

इश्क़ दिखलाता है रंग कैसे विफल,
कल थे जो अजनबी नाख़ुदा हो गये ।

**ब्रजेश शर्मा विफल**

## गजल

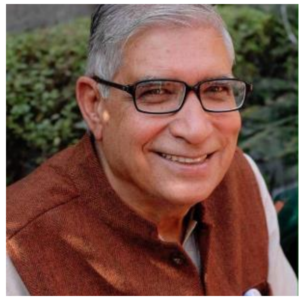

**लक्ष्मी खन्ना ' सुमन'**

खिल उठी हैं प्यार की जो जाफरानी ख़ुशबुएँ
वे मिलीं मुझको जमीं पर आसमानी ख़ुशबुएँ

याद आती हैं ,जवाँ बाहों की चाहों में बसीं
भीचतीं आग़ोश में जो थीं सुहानी ख़ुशबुएँ

अब तलक उनके सरूरों का कोई सानी नहीं
जो पुरानी मय सरीखी हैं पुरानी ख़ुशबुएँ

बेतकल्लुफ़ ,बेझिझक जो जोश से थीं उफनतीं
बाँह फैलाये मिलीं वे दोस्तानी ख़ुशबुएँ

जब गुलाबी इक कली से ,दिल ने माँगी यादगार
चाव से उसने, उसे दे दी निशानी ख़ुशबुएँ

उन निगाहों से कहा जब दिल से हमने शुक्रिया
हो गयीं तब शर्म से वे पानी - पानी ख़ुशबुएँ

मन की बगिया में खिले रोमाँच के उजले ' सुमन'
जब मिली इक अजनबी से बेज़ुबानी ख़ुशबुएँ

**लक्ष्मी खन्ना ' सुमन'**

## दोहे

**विनोद तिवारी 'मानस'**

प्रियतम बिन आवत नहीं,पल भर मुझको चैन।
राह निहारत दिन कटें, रो-रो कटतीं रैन।1।

है उलझी,टूटी कहीं, रिश्तों वाली डोर।
अब कोई मिलता नहीं, होकर भाव विभोर।2।

जिधर देखिये हो रहा, मानवता का ह्रास।
लुप्त हुए सद्गुण सभी, दया धर्म विश्वास।3।

भटका जिसकी चाह में, गली, गाँव, संसार।
भीतर ही बैठा मिला, खोले जब मन द्वार।4।

कलम बेचकर पा रहे, बड़े बड़े सम्मान।
कविवर ऐसे गढ़ रहे,नित्य नए सोपान।5।

दया प्रेम के भाव को, मन में रखो सुजान।
हिंसा वैर विरोध को, तजो सदा विष मान।6।

पिया विरह की वेदना, 'मानस' सही न जाय।
हूँक उठत छतिया जलत,नींद न नैनन आय।7।

कामुकता अभिशाप है,निग्रह है वरदान।
विषय वासना जो तजे, है वह मनुज महान।8।

**विनोद तिवारी 'मानस', भादौर, गुना (म.प्र.)**

## दोहे

आदित्य राजौरिया "अजनबी"

सम्मुख मीठा बोलते, पीछे करते घात।
ऐसे मिलते आजकल, लोग यहाँ दिनरात।1।

जिनको भी सहयोग दो, वही दिखाते जात।
मिठ बोला गर आदमी, झूँठे हैं जज्बात।2।

बाहर से नौने दिखें, भीतर कालाजाम।
छुरा पीठ में घौपते, निकल गया जो काम।3।

अपने ही करने लगे, छुप पीछे से घात।
साथ सत्य के में चला, ये उसकी सौगात।4।

हाँजी हाँजी सब करें, साँच कहें ना कोय।
जो साँची बातें कहें, वो दुश्मन सम होय।5।

मीठा मीठा बोलकर, जग में ठगते लोग।
सत्य बात कड़वी लगे, कम करते उपयोग।6।

जिसका जितना हो सके,कर लो बस उपहास।
इसी बात पर कर रहे, लोग आज विश्वास।7।

संस्कार उतरे धरे, मरा मान सम्मान।
आदमियों की भीड़ में, दिखा नहीं इंसान।8।

**आदित्य राजौरिया "अजनबी" , डबरा जिला ग्वालियर (म.प्र.)**

## मुक्तक

**वंदना दुबे , धार**

रात भर यूँ तैश , दिखाता रहा चाँद
बादलों में खुदको, छुपाता रहा चाँद
न हारने की ज़िद ,ठान रखी थी हमने भी
जाते-जाते मुड़कर मुस्कुराता रहा चाँद।

शाख पर बैठे परिंदे, नीचे गिरते नहीं
ज़मी के जीव भी कभी भूखे मरते नहीं
ये दुनिया, ये दुनिया हमसे है
क्यों इस वहम से अब भी हम उबरते नहीं?

दुनिया झूठ पर चलती रही
ज़िन्दगी यूँ ही ढलती रही
सच का पुलिंदा बन खुद को ,
मैं खुद को ही छलती रही ।

आईना भी कहाँ सच दिखाता है
अक्स हमेशा उल्टा ही बनाता है
किस-किस पर भरोसा करें साहब
यहाँ हर किसी का झूठ से नाता है ।

**वंदना दुबे , धार**

## मुक्तक

**अलका चौधरी 'अनमोल'**

मिलके खुशियाँ मनायें नये साल में,
दूरी दिल की मिटायें नये साल में |
रोशनी ही रहेगी सलामत यहाँ,
आजा तम को हरायें नये साल में |

सभी बातें जो बीती हैं उसे बिसार आया है,
खुली बाहो में लेकर यार देखो प्यार आया है।
मिटाये भेद हम सारे दिलों में जो भी है सारे
नई उम्मीद लेकर साल नूतन यार आया है।

नया इतिहास गढ़ लेना नया तुम नाम कर लेना,
चमकता सा खरा सोना बनो ये काम कर लेना।
गगन को नाप भी लेना कदम तेरे जमीं पे हो,
नये इस साल को दिल से नया सलाम कर लेना।

नये सपनों की डोरी में नई आशा गुथाना है,
अटल विश्वास मन में नव उमंगों को जगाना है।
नजरिया हो नया नव वर्ष में, वक्त की भी जरूरत है,
नवल दीपक जलाना है तमस को भी हराना है।

**अलका चौधरी 'अनमोल'**

## हाइकु

**मान सिंह 'मनहर'**

दिन या रैन
बसी श्याम सूरत
हमारे नैन।

मैं बावरिया
निहारूं डगरिया
आ सांविरया ।

प्रीत की डोर
खींचे तुम्हारी ओर
ओ चितचोर ।

याद तुम्हारी
चुभती हृदय में
बन कटारी ।

कोमल फूल
तुम बिन प्रीतम
बने हैं शूल ।

निहारें नैन
आए नहीं प्रीतम
मन बेचैन।

सजल नैन
धड़कन बेचैन
डसती रैन।

बनके अलि
आजाओ प्रियवर
महकी कली ।

तुम्हीं जीवन
दिल की धड़कन
मेरे सजन ।

**मान सिंह 'मनहर'**

हाइकु

**राजन सिंह**

गणेशोत्सव
भाद्रपद चतुर्थी
गंधपुष्पक।।

कार्तिक भ्राता
अग्रपूजा हैम्बर
मंगल जत्रा।।

पद्ध पुराण
मैल पार्वती स्नान
विघ्न नाशक।।

शिव पार्वती
सहस्त्रनामावली
गजकर्णक।।

पंथ श्रधेश
शनैः शनैः गणेश
पुत्र महेश।।

संदल माथ
सिद्धिविनायक टि
लड्डू हाथ।।

आकाशगंगा
लंबोदर विराजे
विघ्न वितंगा।।

**राजन सिंह**

**हाइकु**

**चंचल पाहुजा**

गुजरा साल
क्षण भर जीवन
करे धमाल

करो स्वागत
नववर्ष सुहाना
नया खजाना

नये साल में
चहुं ओर उमंग
भरे तरंग

गुजरे लम्हें
रोशनी बिखेरते
वर्ष बीतते

नूतन वर्ष
कर नव श्रृंगार
खड़ा है द्वार

**चंचल पाहुजा**

## कविता

### प्रेमरोग

**अनु चक्रवर्ती**

दो लोगों के बीच का सच !
हमेशा ही बना रहता है एक रहस्य ..
बन्द कमरे के अंदर का सन्नाटा
लील जाता है पूरी तरह से
जीवन के उल्लास को ...
अकुलाते देह के भीतर
जब कसमसाती हैं भावनाएं
तब मन की पीड़ा का बोझ
बढ़ जाता है
थोड़ा और ...
स्त्री जब प्रेम में होती है
तब तन , मन , और धन से
करना चाहती है
समर्पण !
खो देना चाहती है
अपना सम्पूर्ण वजूद ....
एक ओंकार की तर्ज़ पर ,
बह जाना चाहती है ..
सम्वेदनाओं की सरिता में ।
किंतु सुपात्र !
की तलाश में
उन्मत्त भी रहती है - उम्र भर ....
फ़र्ज कीजिये -
किसी जोगन को अगर लग जाए
प्रेमरोग !
तो विबम्बना की पराकाष्ठा
भला इससे बड़ी और क्या होगी....
वास्तव में ,
प्रेम में निर्वासित स्त्री ही
वहन कर सकती है
सम्पूर्ण मनोभाव से योग......
अपनी भूख , प्यास ,
और नींदें गंवाती है....
मात्र प्रीत के ,
स्नेहिल स्पंदन की तलाश में ..
और
उसकी ये तलाश
शायद !
अधूरी ही रह जाती है
जन्मों तक ...
क्योंकि
कहीं न कहीं
प्रेम !
संकुचन का अभिलाषी होता है
जबकि श्रद्धा !
चाहती है विस्तार .....

**अनु चक्रवर्ती**

## कविता

## जी हाँ चुनाव...

**कैलाश बिहारी सिंघल**

जी हाँ चुनाव...
यह शब्द सुनते ही
मन मे
एक अजीब सी असमंजस
की स्थिति बन जाती है,
पहले चुनाव करना होता था..
अच्छे और बुरे में से
पर अब तो चुनाव करना है...
बुरे में से कम बुराई का...
बुरे में से कम बुरे को चुनना
उतना ही कठिन है...
जितना समुद्र से मोती चुनना...
जिस प्रकार समुद्र मंथन...में भी
देवताओं को असुरों की सहायता
जरूरी थी,
समुद्र के गर्भ से यदि...
अमृत प्राप्त करना है..?
तो
पहले विषपान करना होगा
वैसे ही लोकतंत्र के इस समुंदर में
कुछ अवांछित असुरों का होना...
जरूरी हो गया..,,
उनके बिना..समुद्र मंथन...
तब भी नही हुवा था,
और आज भी नही होता..,,
आज के राहु केतु भी...
अमृत का चयन करते है,
वो तो शिवशंकर ही थे...
जिन्होंने हलाहल का चयन ही...
नही किया, पिया भी....!
हमने बुराई को समाप्त करने के लिये...
महाराज रावण का चयन किया,
प्रति वर्ष पुतला दहन कर...
मन को अघोषित सन्तोष देते है..
कि हाँ... अब कोई बुराई शेष न बची..
पर यह बुराई है जनाब....
ये भी छुप कर अमृत पी चुकी है...
और समय समय पर...
देश को ग्रहण लगा ही देती है....!!

**कैलाश बिहारी सिंघल**

**कविता**

**चाल**

**कीर्ति प्रदीप वर्मा**

दौड़ी भागी सी ये जिंदगी
खूब करे धमाल।

कभी शांत समंदर सी
कभी लाये भूचाल ।

लगे कृष्ण की गीता सी
कभी शकुनी सी चाल।

जिम्मेदारी की गठरी,
लदी ज्यों हो बेताल।

कभी लगे मेले ठेले सी
कभी होए हड़ताल।

कभी सरल सीधी सी
लगे कभी जंजाल।

गिरगिट सी रंग बदले
पल में करे कमाल।

पकड़ो मुट्ठी मे चंद लम्हे
जाने, कब आ जाए काल?

**कीर्ति प्रदीप वर्मा**

कविता

## अब ना कोई समझौता

कैलाश मंडलोई 'कदंब'

उसने किया
उजाले से समझौता
और सीख ली
अंधेरे में देखने की कला
उल्लुओं से।
कर लिया घूंघट
सदियों तक
होता रहा
यह समझौता
वह नारी
जिसे कहा
अबला बेचारी
और उसने सुन लिया
करती भी क्या?
दुख-दर्दों की मारी
कर दिया मजबूर उसे
घूंघट में चेहरा छुपाने को
किया गया मजबूर
बाल विवाह करने को
सतीत्व के नाम पर
जिंदा जली जो
छीना था
शिक्षा का अधिकार उसका
और
कर लिया उसने
उजाले से समझौता
सीख ली
अंधेरे में देखने की कला
उल्लुओं से।
समय बदला
समय ने करवट ली
हुंकार उठी वह अबला
अब ना कोई समझौता होगा
अब ना वो चुप रहेगी
अब तो वह खुलकर कहेगी
अब ना कोई बेटी भेदभाव सहेगी
अब तो उजाले को उजाला
अंधेरे को अंधेरा कहेगी
अब ना सहेगी बेटियाँ
चुप ना रहेगी बेटियाँ
अब तो कहेगी बेटियाँ
बेटा बेटी एक समान
एक पिता की हम संतान।

**कैलाश मंडलोई 'कदंब'**
**खरगोन (म0प्र0)**

## कविता

## अलविदा 2017

**मीनाक्षी सुकुमारन**

कभी हँसा कर
कभी रुला कर
कभी मिला कर
कभी जुदा कर
कभी ज़ख्म दे कर
कभी मरहम दे कर
कभी आज़मा कर
कभी सहला कर
कभी अपना बन कर
कभी गैर बन कर
जा ही रहे हो बिता साल बन कर
तो ले जाना संग अपने
दर्द , कराहट , टीस सारी
और ले आना खुशी, करार, मुस्कान
करना न समझौता कोई भी
लाने को हर वो खुशी जो सोख ले आँसू सारे ।।

**मीनाक्षी सुकुमारन**

**कहानी**

**बचत**

**देवेंन्द्र सोनी**

सात - आठ साल का रमेश बह्त ही चंचल औऱ महत्वाकांक्षी प्रकृति का किशोर था । कमजोर पारिवारिक स्थिति के चलते उसका बचपन उसकी उद्दाम भावनाओं के अनुरूप न होने के कारण वह तनाव ग्रस्त होता जा रहा था । बात - बात पर घर में अपनी मां को खरी खोटी सुनाता । पिता सुबह ही अपने काम पर चले जाते और देर शाम को लौटते । उसका यह व्यवहार सभी को खलता मगर घर की माली - हालत , रमेश समझने को तैयार नही था । उसका पढ़ाई - लिखाई से मन उचटता जा रहा था । रात - दिन उसे पैसे कमाने की धुन सवार रहती । सब उसे समझाते पर वह किसी की नही सुनता । अंततः उसने बिना किसी की परवाह किए एक दिन कुल्फी का डिब्बा लेकर बेचने का निर्णय किया और गली गली कुल्फी बेची , शाम को हाथ में जो पैसे मिले उससे उसका किशोर मन खिल उठा पर रात को जब रमेश के पिता को यह मालूम पड़ा तो उन्होंने पहले तो उसे समझाया और न मानने पर उसकी जमकर धुनाई कर दी । रोते ह्ए रमेश को रात को अपने एक हाथ में तेज दर्द का एहसास ह्आ तब उसे समझ आया जोश में दिन भर कुल्फी का डिब्बा लिए घूमना कितना कठिन है पर जिद्द के आगे सब बेमानी हो जाता है ।

सुबह जब वह गुस्से में घर से जाने लगा तो उसके दादाजी ने उसे रोका । रमेश अनमने मन से रुका तब दादाजी ने उसे प्यार से समझाया और अपने किसी परिचित की दुकान पर जाने के लिए कहा । वहां रोज सुबह रमेश दूध के पैकेट बेचता और दिन में टाइपिंग सीखता । देखते ही देखते वह टाइप करने में प्रवीण हो गया । अब उसे जो पैसे मिलते उसे वह अपने मन मुताबिक खर्च करने लगा और खुश रहने लगा । कभी कभी घर का भी कोई कोई सामान लाने लगा पर उसकी फिजूल खर्ची बढ़ती जा रही थी । उसे समझाना मुश्किल था लेकिन ऐसे समय में भी घर के बुजुर्ग उसके दादाजी की समझाइस ही काम आई ।

एक दिन जब रमेश शाम को पैसे लेकर घर आया तो दादाजी ने उसे रोका और उसकी लगन , मेहनत की तारीफ करते ह्ए उसके सर पर अपना स्नेहिल हाथ फेर दिया । रमेश को भाव विव्हल होता देख , दादाजी ने कहा - बेटा ! पैसे कमाना बह्त मेहनत का काम है । तुम अब दूध की गाड़ी के समय से सुबह पांच बजे उठते हो, दिन भर टाइप करते हो जो पैसे मिलते हैं यदि उन्हें इसी तरह खर्च करते रहोगे तो जब तुम्हारे पास कोई

काम नही होगा तब क्या करोगे । अपने भविष्य के लिए भी सोचो। दादाजी ने उसे उदाहरण देते हुए समझाया - बेटा जब हम कोई पौधा लगाते हैं तो उसकी जड़ बहुत ही छोटी होती है , लेकिन जैसे जैसे यह बढ़ता है उसकी जड़ें भी बढ़ती जाती है । पौधा जितना ऊपर बढ़ता है , उसकी जड़े भी उतनी ही जमीन के अंदर जाती है। बचत का और निरन्तर प्रगति करने का भी यही मूलमंत्र है।
जितना कमाओ उससे आधा जमीन में जाने दो अर्थात उसे जमा करो , ताकि तुम्हारी बाढ़ रुक न सके ।
रमेश को दादाजी की बात समझ आई । बचत का यह मूलमंत्र उसने अपने जीवन का सिद्धान्त बना लिया । बस फिर क्या था - उसका जीवन ही बदल गया । दादाजी की समझाइस पर उसने अपनी पढ़ाई भी जारी रखी और आज एक सफल उद्यमी के रूप में उसे जाना जाता है ।
रमेश को दादाजी से मिला यह मूलमंत्र - अब धन की बचत के साथ ही उसके परिवार की और अन्य बेसहारा बुजुर्गों की देखभाल (बचत ) में काम आ रहा है । सच , बचत हो तो ऐसी ।

**- देवेंन्द्र सोनी , इटारसी।**

**लघुकथा**

**पहचान**

**नमिता दुबे**

"हां मैं शीला शर्मा हूं|

महिला समाज सेविका और शर्मा लघुउद्योग की मालिक" ।

"आवाक बैठा सुशील उसे देखता रह गया "|
व्यवसाय बढानें के सिलसिले में वो हस्तशिल्प उद्योग की मालिक श्रीमती शीला शर्मा जी से मिलनें आया था । शीला एक छोटे गांव की कमपढी़ लिखी युवती जिसे उसके मातापिता नें उसके जीवन साथी के रूप में चुना था । एक दिन भी नहीं निभा सका । उपेक्षा और नफरत के कारण उसे माता पिता के पास छोड कर शहर आया तो वापस गांव नहीं गया ।
लाख मन को समझानें के बाद भी माँ का व्यवहार उसके साथ बहुत ज्यादा खराब होता गया |मायके में केवल विधवा माँ थीं और कोई नहीं । एक दिन खबर मिली शीला घर से भाग गई है ।

उसनें ध्यान नहीं दिया ना कोई खोज खबर ली । और आज शीला को इस रूप में देख कर वो अचम्भित रह गया ।
"हां तो मिस्टर सुशील हमारे 30 छोटे बडे शहरो में स्टोर्स हैं ,काम बढता जा रहा है इस लिये नये व्यवसायिक अनुबन्ध कर रहे हैं"|
आप मेरे सेकेट्री और मैनेजर के साथ बात करके डील कर लीजिये "|
कह कर शीला अपनी कार में बैठ वहां से चली गई|
"परछाईयां मन में उमडनें लगीं ।
रात के अंधेंरे में घर से दूर भागते हुये ,बार बार पीछे मुड़ कर देखती शीला किसी तरह पास के स्टेशन तक पहुंची और सामनें खडी गाडी में बाथरूम के पास बैठ गई । सुबह नींद खुली तो खुद को दिल्ली महानगर में पाया । कुछ पैसे थे दा कर खाना खाया और पास की कालॉनी की ओर बढ चली । एक सभ्रांत सी महिला दिखी तो उनसे काम के बारे में पूछा । पता नहीं क्या सोच कर वो महिला उसे घर ले आयीं |और अपनें साथ ऑफिस ले गईं| वहां बहुत सारी महिलायें हाथों से सजावटी चीजे बना रहीं थी । शीला को बुनाई और क्रोशिया अच्छा आता था । बस बात बन गई । रहनें का इंतजाम वहीं पास के एक परिवार से बात कर के करवा दिया । शीला नें बहुत मेहनत से काम शुरू कर दिया । और दिन प्रतिदिन उसकी कला निखरती गई । और वो साहिती मैडम का दाहिना हाथ बन गई । आज वो जनरल मैनेजर का पद सम्हाल रही है । समय की धारा और श्रम नें उसकी पहचान गढी़ है |

**नमिता दुबे**

## लघुकथा
## स्वाभिमानी

**हेमंत बोर्डिया**

मुद्दतों बाद एक दिन अचानक वो चेहरा मेरे सामने आ गया जो मेरे ज़हन में किसी बैकग्राउंड वॉलपेपर की तरह चिपका रहता था ।

पिताजी गम्भीर रूप से बीमार थे उन्हें बड़े शहर के अस्पताल में इलाज के लिये भर्ती कराया था , लेकिन कम समय में पैसे की व्यवस्था न करने के कारण डॉक्टर ने इलाज रोक दिया । न ही पिताजी की हालत इतनी स्थिर थी कि मैं अपने शहर जाकर बैंक में अपनी एफ.डी. तुड़वा सकूँ । बहुत गिड़गिड़ाने के बाद डॉक्टर ने कहा कि आप हमारे एकाउंट विभाग में जाकर मैनेजर से मिल लीजिये यदि वो कुछ कर सकें तो हमे कोई आपत्ति नहीं है।

एकाउंट विभाग में जैसे ही प्रवेश किया सामने कविता बैठी थी । 10 वर्ष ही तो बीते थे हमे अलग हुए । कुछ सामाजिक समस्याओं के चलते प्यार के रिश्ते का पटाक्षेप कर दिया था हमने ,वो कहते हैं न आजकल म्यूच्यूअल अंडरस्टैंडिंग से अलग होना.. ठीक वैसे ही । हालाकिं कविता के लिये ये फैसला किसी धोखे से कम नहीं था ।

दो चोटी वाली कविता आज नये रूप और हेयर स्टाइल में दिखी । कुछ दो मिनिट का वक़्त लगा पहचानने में लेकिन घंटो बैठकर जिन आंखों की गहराई नापी हो,मुझे उन्हें पहचानने में ज्यादा वक़्त नहीं लगा । बहरहाल एक दूसरे की पहचान को नज़रंदाज़ करते हुए मैने उसे अपनी समस्या बताई।

पूरी बात सुनकर उसने फटाफट डॉक्टरों को इलाज की स्वीकृति दी और यह भी यह अनुरोध भी किया डॉक्टर्स से की इलाज में किसी तरह की कोताही न हो । दिन में 2-3 बार खुद भी पिताजी का हाल जानने आती रही बतौर अस्पताल प्रबंधन के नाते..!! 6-7 दिनों में पिताजी स्वस्थ हो गए और अस्पताल से छुट्टी का वक़्त आ गया ।

मुझसे रहा नहीं गया और मैं कविता को धन्यवाद कहने चला आया । मैने कविता से पूछा कि मैं जानता हूँ कि मेरे उस फैसले के बाद तुम्हें मुझसे नफ़रत हो गयी होगी लेकिन फिर भी तुमने मेरी इतनी सहायता क्यूँ की?

कविता ने इतने दिनों में पहली बार मेरी आँखों में देखकर ज़वाब दिया- मैं इतनी स्वाभिमानी तो हूँ कि अपना प्यार छुपा लूँ लेकिन इतनी पत्थर दिल नहीं कि किसी की ज़रूरत के वक्त उससे अपनी पहचान भी छुपा लूँ और यह कह कर वह केबिन से बाहर चली गयी । एक बार फिर उसकी म्यूच्यूअल अंडरस्टैंडिंग का एहसान लिए मैं भारी मन से अस्पताल से अपने शहर आ गया ।

**हेमंत बोर्डिया**

## लघुकथा
## मालकिन

**सीमा अग्रवाल**

मालकिन

(आओ आओ सारी home maker आओ......ईमानदारी से सोचो )

"सुनो जी सोच रही हूँ इस बार अपने जन्मदिन पर कमला को एक अच्छा प्रेशर कूकर लाकर दे दूँ बेचारी सारा दिन दूसरों के घरों में काम करती है फिर जाकर अपने घर में खटती है, कुछ तो राहत हो जायेगी उसे"

"नहीं नहीं इतना सर चढ़ाने की ज़रुरत नही 200 रुपये दे दो बस .. अपनी मर्जी से वो कहीं भी खर्च करती रहे"

"मगर"

" कह दिया ना.........अब और बहस नहीं इस टॉपिक पर ...

अगले दिन सुबह ...............

"ये ले कमला आज मेरे जन्मदिन की खुशी में साहब ने ये तुझे देने को बोला है"

लिफाफा माथे से लगाते हुए कमला ने ढेरों दुआएं दीं.......... मालकिन होने का गर्व उबल- उबल कर मेरे चेहरे से टपकने लगा.......

दोपहर में...........

कमला के हाथों में एक सुन्दर सा लिफाफा था ...

"दीदी ये आपके लिए......... आपको जन्मदिन की एक बार फिर **बधाई**"

"ये क्या है?"

"आप खुद खोलिए ना और बताइये आपको पसंद आयी या नहीं ? उसी दुकान से लाई हूँ जहां से आप खरीदती हैं"

लिफ़ाफ़े में खूबसूरत सी एक साड़ी, .........रेट टैग हटा देना चाहिए शायद इतनी समझ उसमे नहीं है.........

" ये क्या कमला !!!!!!! हद कर दी तूने भी ....इतना खर्च कर डाला...कल ही तो पैसों को लेकर जगदीश इतना झगड़ा है तेरे से...इसके लिए तो तेरे हाथ पैर ही तोड़ देगा "

"ऐसे कैसे तोड़ देगा दीदी ? मैं उसके सवालों की जवाबदेह ना हूँ .......मेहनत से कमाती हूँ .........खुद मालकिन हूँ अपने पैसों की.....खुद फैसला करती हूँ क्या करना है क्या नहीं"

और अब मैं असली मालकिन के सामने खड़ी थी..............

सीमा अग्रवाल

**आलेख**

## तर्क के आरोहण के बाद बनेगा हिन्दी राष्ट्रभाषा का सूर्य

**डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'**

समग्र के रोष के बाद, सत्य की समालोचना के बाद, दक्षिण के विरोध के बाद, समस्त की सापेक्षता के बाद, स्वर के मुखर होने के बाद, क्रांति के सजग होने के बाद, दिनकर, भास्कर, चतुर्वेदी के त्याग के बाद, पंत, सुमन, मंगल, महादेवी के समर्पण के बाद भी कोई भाषा यदि राष्ट्रभाषा के गौरव का वरण नहीं कर पाई तो इसके पीछे राजनैतिक धृष्टता के सिवा कोई कारक तत्व दृष्टिगत नहीं होता |

हाँ! जब एक भाषा संपूर्ण राष्ट्र के आभामण्डल में उस पीले रंग की भांति सुशोभित है जो चक्र की पूर्णता को शोभायमान कर रहा है, उसके बाद भी 'राजभाषा' की संज्ञा देना न्यायसंगत नहीं लगता।

**बहरहाल हम पहले ये तो जाने कि क्यों आवश्कता है राष्ट्रभाषा की ?** जिस तरह एक राष्ट्र के निर्माण के साथ ही ध्वज को, पक्षी को, खेल को, पिता को, गीत को, गान को, चिन्ह तक को राष्ट्र के स्वाभिमान से जोड़कर संविधान सम्मत बनाने और संविधान की परिधि में लाने का कार्य किया गया है तो फिर भाषा क्योंकर नहीं?

किसी भी राष्ट्र में जिस तरह राष्ट्रचिन्ह, राष्ट्रगान, राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगीत, राष्ट्रीय पक्षी, राष्ट्रीय पशु की अवहेलना होने पर देशद्रोह का दोष लगता है परन्तु भारत में हिन्दी के प्रति इस तरह का प्रेम राजनैतिक स्वार्थ के चलते राजनीति प्रेरित लोग नहीं दर्शा पाए, उसके पीछे मूल कारण में सत्तासीन राजनीतिक दल का दक्षिण का पारंपरिक वोट बैंक टूटना भी है।

हाशिए पर आ चुकी बोलियाँ जब केन्द्रीय तौर पर एकिकृत होना चाहती है तो उनकी आशा का रुख सदैव हिन्दी की ओर होता है, हिन्दी सभी बोलियों को स्व में समाहित करने का दंभ भी भरती है साथ ही उन बोलियों के मूल में संरक्षित भी होती है। इसी कारण समग्र राष्ट्र के चिन्तन और संवाद की केन्द्रिय भाषा हिन्दी ही रही है।

विश्व के 178 देशों की अपनी एक राष्ट्रभाषा है, जबकि इनमे से 101 देश में एक से ज्यादा भाषाओं पर निर्भरता है और सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि एक छोटा-सा राष्ट्र है **'फिजी गणराज्य'** जिसकी आबादी का कुल 37 प्रतिशत हिस्सा ही हिन्दी बोलता है, पर उन्होनें अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी को घोषित कर रखा है । जबकि हिन्दुस्तान में 50 प्रतिशत से ज्यादा लोग हिन्दीभाषी होने के बावजूद भी केवल राजभाषा के तौर पर हिन्दी स्वीकारी गई है।

***राजभाषा का मतलब साफ है कि केवल**

**राजकार्यों की भाषा।***

आखिर राजभाषा को संवैधानिक आलोक में देखें तो पता चलता है कि 'राजभाषा' नामक भ्रम के सहारे सत्तासीन राजनैतिक दल ने अपने कर्तव्यों की इतिश्री कर ली। उन्होनें दक्षिण के बागी स्वर को भी समेट लिया और देश को भी झुनझुना पकड़ा दिया ।

राजभाषा बनाने के पीछे सन 1967 में बापू के तर्क का हवाला दिया गया जिसमें बापू नें संवाद शैली में राष्ट्रभाषा को राजभाषा कहा था । शायद बापू का अभिप्राय राजकिय कार्यों के साथ राष्ट्र के स्वर से रहा हो परन्तु तात्कालिन एकत्रित राजनैतिक ताकतों ने स्वयं के स्वार्थ के चलते बापू की लिखावट को ढाल बनाकर हिन्दी को ही हाशिए पर ला दिया ।

देश के लगभग १० से अधिक राज्यों में बहुतायत में हिन्दी भाषी लोग रहते हैं, अनुमानित रुप से भारत में ४० फीसदी से ज़्यादा लोग हिन्दी भाषा बोलते है । किंतु दुर्भाग्य है क़ि हिन्दी को जो स्थान शासकीय तंत्र से भारत में मिलना चाहिए वो कृपापूर्वक दी जा रही खैरात है बल्कि हिन्दी का स्थान राष्ट्र भाषा का होना चाहिए न क़ि राजभाषा का । हिन्दी का अधिकार राष्ट्रभाषा का है।

**राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा बताये गये निम्नलिखित लक्षणों पर दृष्टि डाल लेना ही पर्याप्त रहेगा, जो उन्होंने एक 'राजभाषा'के लिए बताये थे**

(1) अमलदारों के लिए वह भाषा सरल होनी चाहिए।

(2) उस भाषा के द्वारा भारतवर्ष का आपसी धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवहार हो सकना चाहिए।

(3) यह जरूरी है कि भारतवर्ष के बहुत से लोग उस भाषा को बोलते हों।

(4) राष्ट्र के लिए वह भाषा आसान होनी चाहिए।

(5) उस भाषा का विचार करते समय किसी क्षणिक या अल्प स्थायी स्थिति पर जोर नहीं देना चाहिए।

इन लक्षणों पर हिन्दी भाषा खरी तो उतरी किंतु राष्ट्रभाषा होना हिन्दी के लिए गौरव का विषय होगा ।

**अनुच्छेद 343 संघ की राजभाषा**

संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी, संघ के अशासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा।

खंड (1) में किसी बात के होते हुए भी, इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि तक संघ के उन सभी शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा जिनके लिए उसका ऐसे प्रारंभ से ठीक पहले प्रयोग किया जा रहा था, परन्तु राष्ट्रपति उक्त अवधि के दौरान, आदेश द्वारा, संघ के शासकीय प्रयोजनों में से किसी के लिए अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त हिंदी भाषा का और भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय रूप के अतिरिक्त देवनागरी रूप का प्रयोग प्राधिकृत कर सकेगा।

इस अनुच्छेद में किसी बात के होते हुए भी, संसद उक्त पन्द्रह वर्ष की अवधि के पश्चात विधि द्वारा

(क) अंग्रेजी भाषा का या

(ख) अंकों के देवनागरी रूप का,

ऐसे प्रयोजनों के लिए प्रयोग उपबंधित कर सकेगी जो ऐसी विधि में विनिर्दिष्ट किए जाएं।

**अनुच्छेद 351 हिंदी भाषा के विकास के लिए निर्देश**

संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्तानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करें।

हिन्दी के सम्मान की संवैधानिक लड़ाई देशभर में विगत ५ दशक से ज़्यादा समय से जारी है, हर भाषाप्रेमी अपने-अपने स्तर पर भाषा के सम्मान की लड़ाई लड़ रहा है ।

हाँ! हम भारतवंशियों को कभी आवश्यकता महसूस नहीं हुई राष्ट्रभाषा की, परन्तु जब देश के अन्दर ही देश की राजभाषा या हिन्दी भाषा का अपमान हो तब मन का उत्तेजित होना स्वाभाविक है ।जैसे राष्ट्र के सर्वोच्च न्याय मंदिर ने एक आदेश पारित दिया है कि न्यायालय में निकलने वाले समस्त न्यायदृष्टान्त व न्यायिक फैसलों की प्रथम प्रति हिन्दी में होगी, परन्तु 90 प्रतिशत इसी आदेश की अवहेलना न्यायमंदिर में होकर सभी निर्णय की प्रतियाँ अंग्रेजी में दी जाती है और यदि प्रति हिन्दी में मांगी जाए तो अतिरिक्त शुल्क जमा करवाया जाता है ।

वैसे ही देश के कुछ राज्यों में हिन्दीभाषी होना ही पीढ़ादायक होने लगा है जैसे कर्नाटक सहित तमिलनाडु, महाराष्ट्र आदि। वही हिन्दीभाषियों के साथ हो रहे दुर्व्यवहार भी सार्वभौमिक है। साथ ही कई जगहों पर तो हिन्दी साहित्यकारों को प्रताड़ित भी किया जाता है। ऐसी परिस्थिति में कानून सम्मत भाषा अधिकार होना यानी राष्ट्रभाषा का होना सबसे महत्वपूर्ण है।

कमोबेश हिन्दी की वर्तमान स्थिति को देखकर सत्ता से आशा ही की जा सकती है कि वे देश की सांस्कृतिक विरासत को सहेजने के लिए, संस्कार सिंचन के तारतम्य में हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित कर इसे अनिवार्य शिक्षा में शामिल करें । इन्हीं सब तर्कों के संप्रेषण व आरोहण के बाद ही हिन्दी को राष्ट्रभाषा का सूर्य मिलेगा और देश की सबसे बड़ी ताकत उसकी वैदिक संस्कृति व पुरातात्विक महत्व के साथ-साथ राष्ट्रप्रेम जीवित रहेगा ।

**डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'**
**संस्थापक- हिन्दीग्राम**
**इंदौर, मध्यप्रदेश**

## आलेख

## आचार्य और विद्यार्थी के संबंध में नैतिक मूल्य

**पिंकी परुथी 'अनामिका'**

**प्रस्तावना**

इतिहास भी गवाह है,
ग्रंथ पुराण भी, बता रहे,
आचार्य पद है सर्वश्रेष्ठ
सही दिशा ये ही दिखा रहे।
गुरु शिष्य का संबंध हो
घड़े और कुम्हार सा।
व्यवसाय बन गया है जो,
सब पतन की ओर जा रहे।
संवेदनाएं यदि कुछ बाकी हों,
शांति गर तुम चाह रहे,
नैतिक मूल्य सिखाओ फिर से,
सभ्यता को जो बचा रहे।

**पिंकी परुथी "अनामिका"**

सभी जानते हैं और मानते हैं कि किसी बालक की पहली पाठशाला उसका घर और सबसे पहले गुरु उसके माता-पिता होते हैं तो सर्वप्रथम माता पिता का दायित्व है कि वे अपने अपने बच्चों को सुसंस्कारी बनाएं, बल्कि उसके पहले स्वयं को परिमार्जित करें। जो आधारशिला वे रखेंगे तो बालक कभी भी भटकेगा नहीं।

आज नैतिक मूल्यों की परिभाषा पूरी तरह से बदल चुकी है। आज के बालक किस तरह से अपने बड़ों और आचार्यों के साथ व्यवहार करते हैं , वो बेहद शर्मनाक है, और हमें इसलिए ऐसा अनुभव होता है क्योंकि हम सभी उस पीढ़ी से संबंधित हैं जिसने आचार्यों और गुरुओं का बहुत सम्मान किया है और आज हम नई पीढ़ी में बदले हुए व्यवहार को भी देख पा रहे हैं। एक और आगे की पीढ़ी तो यह अंतर भी नहीं कर पाएगी।

शिक्षा मनुष्य के सम्यक विकास के लिए उसके विभिन्न ज्ञान तंतुओं को प्रशिक्षित करने की प्रक्रिया है। इसके द्वारा लोगों में आत्मसात करने, ग्रहण करने, रचनात्मक कार्य करने, दूसरों की सहायता करने और राष्ट्रीय महत्व के कार्यक्रमों में

पूर्ण सहयोग देने की भावना का विकास होता है। इसका उद्देश्य व्यक्ति को परिपक्व बनाना है। क्या हम ऐसा करने में सफल हो रहे हैं????
शिक्षा की प्रक्रिया युग साक्षेप होती है। युग की गति और उसके नए , नए परिवर्तनों के आधार पर प्रत्येक युग में शिक्षा की परिभाषा और उद्देश्य के साथ ही उसका स्वरूप भी बदल जाता है। हर उस समय में शिक्षा की नयी परिवर्धित रुपरेखा की आवश्यकता होती है। शिक्षा की एक बहुत बड़ी भूमिका यह भी है कि वह अपनी संस्कृति, धर्म तथा अपने इतिहास को अक्षुण्ण बनाए रखें, जिससे की राष्ट्र का गौरवशाली अतीत भावी पीढ़ी के समक्ष द्योतित हो सके और युवा पीढ़ी अपने अतीत से कटकर न रह जाए।
इन्हीं सब बिंदुओं पर चर्चा ही इस शोध का उद्देश्य है।
*मुख्य भाग (विवरण)*
हमारे आचार्यों और ऋषियों ने जब कहा कि *आचार: परमो धर्म:*, तो इसका यही अर्थ रहा कि , नैतिकता ही सबसे बड़ा धर्म है।
आज के समाज में मूल्यों का स्तर गिरता जा रहा है। सभी प्रकार के मानवीय मूल्यों के घटने से चरित्र पतन सबसे बड़ा कारण है। हमारा चरित्र आज क्यों भ्रष्ट और नष्ट हो रहा है? यह आज एक ज्वलंत विचारणीय प्रश्न है। महाकवि व्यास ने अट्ठारह पुराणों का सार भाग प्रस्तुत करते हुए कहा कि
*अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनं द्वयम्।*
*प्रोपकाराय पुण्याय पापाय परपीड़नम्।*
अर्थात् दूसरों को पीड़ित करने से बड़ा पाप नहीं है और परोपकार से बढ़कर कोई पुण्य नहीं है। आज जब हम इस पर विचार करते हैं तो हम देखते हैं कि आज तो जैसे पाप पुण्य का भेद ही मिट गया है। आज चारों ओर नैतिकता का घोर पतन हो रहा है। शिष्टाचार, सदाचार, शीलाचार आदि सब कुछ धराशायी होकर समाज के उच्च आदर्शों और मूल्यों से दूर हो चुके हैं। भ्रष्टाचार की गोद में ही अनाचार, दुराचार, मिथ्याचार पलते हैं जो हमारे संस्कारों को पल्लवित और अंकुरित ही नहीं होने देते हैं। समाज एक भटकी हुई अमानवीयत के पथ पर चलने लगा है, जहां किसी प्रकार से जीवन को , न तो शांति है, न विश्वास , न आस्था, न मिलाप, न सौहार्द और न सहानुभूति मिलती है। पूरा जीवन मूल्य विहीन रेत सा, नीरस, और तृण सा बेदम होने लगता है।
नैतिकता नर का ही भूषण नहीं, अपितु वह समाज और राष्ट्र का ऐसा दिव्य गुण है जिससे महान से महान शक्ति का संचार होता है।
इससे राष्ट्र की संस्कृति और सभ्यता, महानता के शिखर पर आसीन होती है। लेकिन आज मनुष्य मनुष्यता को भूलकर पशुता को ही श्रेष्ठ मान रहा है क्योंकि नैतिकता परिवेश में कहीं भी दिखाई नहीं दे रही । आश्चर्य की बात यह है कि भारत जो नैतिकता के गुणों से युक्त राष्ट्र रहा है, वहीं इसकी सबसे ज्यादा कमी दिखाई दे रही है।

व्यक्ति के निर्माण और समाज के उत्थान में शिक्षा का अत्यधिक महत्वपूर्ण योगदान होता है। प्राचीन काल की भारतीय गरिमा ऋषियों द्वारा संचालित *गुरुकुल पद्धति* , के कारण ही ऊंची

उठ सकी थी। पिछले दिनों भी जिन देशों ने अपना भला बुरा निर्माण किया है, उसमें शिक्षा को ही प्रधान साधन बनाया है। किसी भी देश का उत्थान या पतन इस बात पर निर्भर करता है कि वहां के नागरिक किस स्तर के हैं और यह स्तर बहुत करके वहां की शिक्षा पद्धति पर निर्भर रहता है।

*भारत के गौरवशाली इतिहास के ख्याति प्राप्त शिक्षक*

"Teacher is the architect of happy homes, prosperous communities and perfect nations"

आचार्य और विद्यार्थी के संबंध में नैतिकता ही आदर्श समाज का निर्माण करती है। भारत देवों की भूमि रही है अर्थात नैतिक मूल्यों की भूमि रही है। इसके निर्माण व विकास का इतिहास आचार्यों का शिष्यों के प्रति समर्पण का इतिहास रहा है।

भीष्म पितामह जैसा आदर्श नीतिपालक का निर्माण गुरु परशुराम की देन था।

कौरवों और पांडवों के राजगुरु द्रोणाचार्य की शिक्षा दीक्षा भी हमने देखी है।

नंदवंशी का अंतिम शासक धननंद जब अपने अत्याचारों से इस धरा को प्रकंपित कर रहा था, तो गुरु चाणक्य ने मुरा नामक दासी पुत्र चंद्रगुप्त को शिक्षित कर भारत के सिंहासन पर बैठाया।

रामकृष्ण परमहंस स्वामी जी से शिक्षा प्राप्त कर स्वामी विवेकानंद जी सर्वधर्म सम्मेलन में अपने एक ही उद्बोधन से विश्व विख्यात हो जाते हैं।

इसी भांति धौम्य ऋषि व आरुणी , तथा वाल्मीकि एवं लव कुश भी गुरु शिष्य नैतिक परंपराओं का उदाहरण रहे हैं।

आधुनिक युग में डा सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने गुरु पद प्रतिष्ठा , परंपरा व मर्यादा को अक्षुण्ण ही नहीं बनाए रखा अपितु भारत के पक्ष में संयुक्त राष्ट्र संघ में सौ बार से भी अधिक वीटो शक्ति का उपयोग करने वाले रूस को मैत्री संबंधों में बांधने का अभूतपूर्व प्रदर्शन कर शिक्षकीय महत्व को प्रतिष्ठापित किया।

जब विसिटिंग प्रोफेसर के रूप में जब राधाकृष्णन सरहद पार गए और विशाल जुलूस में जिस बग्घी में बैठे, उसमें घोड़ों की जगह स्वयं छात्र जुत गए। ये अपने गुरु के प्रति सम्मान ही नहीं अपितु नैतिकता की पराकाष्ठा ही कही जा सकती है।

*भारत का गौरवशाली इतिहास और दुनिया को शिक्षित करने में योगदान*

हमारी सभ्यता विश्व की प्राचीनतम सभ्यता रही है। सबसे पहली किताब भी हमने ही लिखी। ज्ञान में भी शिरोमणि रहे। गुरु शिष्य परंपरा का हमारा अनूठा इतिहास रहा है। भव्य महलों में जीवन यापन करने वाले राजशाही परिवारों के राजकुमारों ने भी गुरुओं के आश्रम में रह कर ज्ञानार्जन किया। हमने विश्व को सर्वधर्म समभाव, मानवीय मूल्यों और नैतिकता का पाठ पढ़ाया। इसीलिए शायद हम विश्वगुरु कहलाए।

आदिकाल से ही गुरु मार्गदर्शक रहे , लोक

कल्याणकारी राजाओं की एक श्रृंखला हमें देखने को मिलती है, उसके नैपथ्य में गुरु ही रहे हैं। फर्श से अर्श पर स्थापित करना व दासी पुत्र को भी सिंहासन पर पहुंचाना और यहां तक कि कभी अस्त न होने वाले साम्राज्यों को अस्ताचल मार्ग भी एक गुरु ने ही दिखाया है। भारत के इतिहास में इसके अनेकानेक प्रमाण हैं।

शिक्षा के साथ साथ मानवीय मूल्यों से ओतप्रोत नैतिक आचरण स्थापित करना हमारे गुरुओं की परंपरा रही है। शायद गुरु वशिष्ठ व गुरु विश्वामित्र नहीं होते तो दशरथ नंदन राम की आदर्शवादिता के हमें दर्शन नहीं होते। श्री राम जी के आज्ञा पालन, सिंहासन त्याग, जैसी भावना का उदाहरण कहीं और देखने को कैसे मिल सकता था?

जहां तक नैतिक मूल्यों के साथ शौर्य गाथा की चर्चा करें तो धरा को राक्षसों से मुक्त करा कर , रामराज्य की स्थापना श्री राम जी ने ही की।

महाभारत काल में भी गुरु सांदीपनि ने भगवान श्री कृष्ण में नैतिकता व समर्पण की ऐसी ज्योति प्रज्ज्वलित की, कि अपने दरिद्र मित्र सुदामा को तीन लोकों का राज तक दे दिया।

एक गुरु की भूमिका अदा कर नैतिकता व कर्म का भगवान श्रीकृष्ण ने सारथी बन अर्जुन को गीता का ऐसा पाठ पढ़ाया कि कुरुक्षेत्र के मैदान में एक बार फिर सत्य का परचम लहराया।

सम्राट अशोक की क्रूरता , जो कलिंग युद्ध में देखने को मिली वह, इतिहास का काला अध्याय है किन्तु उपगुप्त नामक गुरु की शरण में जाने से अशोक का इतना हृदय परिवर्तन हुआ कि वह महान शासक ही नहीं कहलाया अपितु अशोक इतिहास का स्वर्णिम अध्याय बन गया।

समर्थ गुरु रामदास जी से शिक्षा प्राप्त करके ही छत्रपति शिवाजी महाराज ने क्रूर मुग़ल भव्य सेना व विशाल मुग़ल साम्राज्य के क्रूर शासक औरंगजेब से लोहा लेने में कामयाब हुए और हिंदू धर्म की पुनर्स्थापना की।

भारत के ग्यारहवें राष्ट्रपति डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम साहब एक महान वैज्ञानिक और सच्चे शिक्षक थे। अपने जीवन काल में उन्होंने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए हमेशा सकारात्मक सोच रखने, कठिनाइयों को आवश्यक समझने, सपनों का पीछा करने, अपनी आदतों को बदलने, शिक्षा को महत्व देने, ऊंची उड़ान और ऊंची सोच रखने की प्रेरणा देते रहे। शिक्षा को बढ़ावा देने की भावना को पूरा विश्व जानता है।

*वर्तमान शिक्षा पद्धति की खामियां*

आज हमारे देश की शिक्षा पद्धति कुछ अजीब है । यहां नौकरी भर कर सकने में समर्थ बाबू लोग ढाले जाते हैं। हर साल करोड़ों युवा बेकार घूमते हैं। अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा न होते देखकर

उपद्रवी हो जाते हैं। हमारा शिक्षित वर्ग , अशिक्षितों की अपेक्षा अधिक सिरदर्द है। यह शिक्षा पद्धति चरित्र गठन, भावनात्मक उत्कर्ष, विवेक का तीखापन, तथा आर्थिक स्वावलंबन की दृष्टि से खोखली है। सरकार का काम है कि वह राष्ट्र की आवश्यकता और परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन करे। आज शिक्षकों ने शिक्षा को विद्या का दान न समझकर अधिक से अधिक पैसा कमाने का साधन मान लिया है। आज यदि बालक विद्यालय के अलावा ट्यूशन न पढ़े तो वह आगे नहीं बढ़ सकता। दूसरा पहलू यह भी है कि पैसे के बल पर अज्ञानी, उद्दंड और उच्छृंखल बालक भी योग्य बालक से आगे निकल जाता है। योग्यता, परिश्रम, ईमानदारी, लगन , समर्पण , ये सब कुछ काल्पनिक सा हो गया है। ऐसी स्थिति में जागरूकता पैदा करने की महती आवश्यकता है। विद्यार्थियों का भविष्य अंधकारमय न हो , इसके लिए बहुत प्रयास करने होंगे।

*ऐसी स्थिति में गुरुओं और आचार्यों का बहुत योगदान* चाहिए जो जीवन जीने की कला, चरित्र निर्माण जैसे तथ्यों का सांगोपांग मिश्रण सिखा सकें। उद्योगों का प्रशिक्षण जैसे विभिन्न मशीनों की मरम्मत, प्रेस व्यवसाय की बारीकियां , कंपोज, छपाई, रबड़ की मुहरें, सुगंधित सामान बनाने आदि होना चाहिए। शिक्षा प्रणाली को अधिक परिष्कृत और व्यवस्थित ढंग से चलाया जाना चाहिए।

*उपसंहार*

आज व्यक्ति अगणित कुत्साओं और कुंठाओं से घिरा है। शिक्षा और संपदा बढ़ी है पर वे व्यक्तितत्व की दृष्टि से अध: पतित होते चले जा रहे हैं। समाज में जहां सहयोग चाहिए था वहां शोषण पनप रहा है। गुरु अपने शिष्य के प्रति ईमानदार हो जाएं और उनका जीवन यापन भी आराम से हो , यदि इसके लिए प्रयास किए जाएंगे तो बदलाव की संभावना है। शिष्य की मनःस्थिति और कुंठाओं को एक गुरु चमत्कारिक रूप से ठीक कर सकता है। चाहे जितना भी समय बदले, लेकिन यह भी निश्चित है कि शिष्य अपने गुरु के लिए अपने जीवन में विशेष स्थान रखता है। उसे ज्ञात होता है कि मेरे भविष्य निर्माण में गुरु ही मेरी सबसे अधिक सहायता करेंगे। अब दायित्व गुरु का ही बन जाता है कि वे अपनी गरिमा को बनाए रखें , मित्रवत व्यवहार करते हुए भी पद प्रतिष्ठा का ध्यान रखें। अपने विषय पर पैठ बनाएं जिससे अध्यापन क्षमता भी उत्कृष्ट कोटि की हो। ऐसी तीव्र विचार पद्धति की आवश्यकता है जो जनमानस को झकझोर कर रख दे और सही राह दिखाए। सही दिशा में किया गया छोटा सा प्रयत्न भी उपयोगिता के कारण आगे बढ़ने में मदद करेगा। नैतिकता व्यक्ति के

आचरण में परिलक्षित होनी चाहिए। यह तभी संभव है जब नैतिक मूल्यों की जानकारी के साथ साथ उसकी मानसिक और वैचारिक पृष्ठभूमि भी उच्च स्तर की हो।

*नैतिकता के पतन को बचाने की संभावनाएं कितनी*

आचार्य और विद्यार्थी के संबंध में नैतिक मूल्यों को बनाए रखने के लिए कुछ प्रयास करने होंगे।

१. माता पिता को भी संस्कारवान होना होगा।

२. पाठ्यक्रम में नैतिक मूल्यों का विषय अवश्य हो।

३. खेल खेल में सहयोग की भावना, उदारता, स्वच्छ प्रतियोगिता का भाग बनना, स्वावलंबन आदि गुणों को सिखाना होगा।

४. शिक्षा के महत्व को समझना होगा।

५. देश के प्रति कर्तव्य को समझना होगा।

६. बड़ों को सम्मान देने की भावना का विकास होना बहुत जरूरी है।

७. शिक्षकों में विद्यार्थियों के प्रति समर्पण की भावना का विकास होना चाहिए और अध्यापन कार्य को व्यवसाय बनाने से रोकना होगा। इसके लिए सरकार का योगदान आवश्यक है कि शिक्षक को समाज में उच्चतम स्थान मिले, साथ ही आजीविका के लिए पर्याप्त धन दिया जाए और वे संतुष्ट रहें।

८. सरकार को चाहिए कि वह शिक्षकों की नियुक्ति ऐसे कई कामों में जैसे जनगणना, पोलियो अभियान, मिड डे मील योजना, चुनावों के दौरान और बहुत से ऐसे कार्यक्रमों में न लगाएं, क्योंकि इससे अध्यापन कार्य बाधित न हो। ९. अध्यापकों का शोषण नहीं होना चाहिए।

१०. अध्यापकों को भी अपने पद की गरिमा का ध्यान रखना चाहिए। ऐसा कोई भी कार्य नहीं करना चाहिए जिससे मर्यादा भंग न हो।

*संदर्भ*-

*निबंध- नैतिक मूल्य और वर्तमान शिक्षा* ( शोध गंगा)

१. कल्याण शिक्षांक- राधेश्याम खेमका, गीता प्रेस गोरखपुर, वर्ष १९८८, राष्ट्रीय शिक्षा नीति एक विहंगावलोकन- श्री मुरारी लाल शर्मा, पृष्ठ - ३६१

२. उच्च शिक्षा में गुणवत्ता प्रबंधन पुस्तक से , बसंत प्रताप सिंह ( प्रमुख सचिव) उच्च शिक्षा विभाग, पृष्ठ -५

३.http://pustak.org/books/bookdetails/4200

४. आज का समाज और नैतिक मूल्य पर निबंध, Hindi Essay on Moral values in society- by Sarita Mahar - 2016-09-04, last updated : November 28, 2016at 4:28 pm

५. कुछ वार्तालाप शिक्षकों से - तिलक बाल मंदिर, बारां, राजस्थान। ३२५२०५

## रिपोतार्ज: रोहित त्रिवेदी

## 'हिन्दी के सम्मान के लिए 'शिक्षालय की ओर हिन्दीग्राम'

हिन्दीग्राम के हस्ताक्षर बदलो अभियान की महक पहुँची विद्यालय-विद्यालय

वारासिवनी बालाघाट । देशभर में हिन्दी के सम्मान व उसे राष्ट्रभाषा के रुप में स्थापित करने के उद्देश्य से हिन्दीग्राम व मातृभाषा उन्नयन संस्थान द्वारा शैक्षणिक संस्थों में बच्चों के हस्ताक्षर हिन्दी में करने की प्रेरणा हेतु 'शिक्षालय की ओर हिन्दीग्राम' प्रकल्प शुरू किया गया । जिसके तहत वारासिवनी के विद्यालय सरस्वती शिशु मंदिर व केशव पब्लिक स्कूल से शुरुआत हुई ।
संस्था की उपाध्यक्ष डॉ.प्रीति सुराना जी के नेतृत्व में साथी सुश्री अदिति रुसिया जी व सुश्री राजश्री तिवारी जी द्वारा विद्यालयों में जाकर बच्चों को हिन्दी भाषा के महत्व के बारे में बताया गया । साथ ही बच्चों को अपने हस्ताक्षर हिन्दी में करने की प्रेरणा देकर प्रतिज्ञापत्र भरवाकर प्रतिज्ञा दिलवाई गई । लगभग 100 से अधिक बच्चों ने हिन्दी में हस्ताक्षर करने का प्रण लिया ।
इसी कड़ी में बालाघाट के श्री दादाबाड़ी जैन उ मा विद्यालय बालाघाट एवं अरबन ज्ञानपीठ बालाघाट में भी संस्था उपाध्यक्ष श्रीमती प्रीति सुराना जी , सुश्री अलका चौधरी जी, श्री संजय कोचर जी द्वारा बच्चों को हिन्दी के महत्व के बारे में बताया गया । लगभग 400 बच्चों सहित शिक्षक शिक्षिकाओं ने हिन्दी में हस्ताक्षर करने की शपथ ली।

हिन्दी शिक्षकों व बच्चों ने हस्ताक्षर बदलने के साथ-साथ हिन्दी के प्रति अपने उत्तरदायित्व का निर्वाहन का भी प्रण लिया ।

मातृभाषा उन्नयन संस्थान व हिन्दीग्राम द्वारा सभी बच्चों को भाषा सारथी सम्मानपत्र दिया जाएगा और जो विद्यालय हस्ताक्षर बदलों अभियान से जुड़ रहे है उनका सम्मान संस्थान के वार्षिक कार्यक्रम में किया जाएगा ।

इसी तारतम्य में नववर्ष के स्वागत में साहित्यिक सांस्कृतिक संस्था सहमत द्वारा आयोजित काव्य गोष्ठी में भी उपस्थित साहित्यकार श्री राजेन्द्र शुक्ल सहज जी श्री अशोक सागर मिश्रा जी श्री प्रणय श्रीवास्तव अश्क जी श्री साहेब लाल सरल जी सहित श्रीमती प्रीति सुराना जी एवं अलका चौधरी जी द्वारा मातृभाषा का गौरवगान अपनी कविता के माध्यम से किया गया एवं हिन्दी मे हस्ताक्षर करने हेतु प्रेरित किया गया जिसका प्रसारण पद्मेश सिटी केबल पर किया गया ।

**रोहित त्रिवेदी**

## संस्मरण
## हिंदी साहित्य के विलक्षण कवि
## "कवि रघुवीर सहाय"
## संदर्भ :- 9 दिसंबर जन्म दिवस

**कवि रघुवीर सहाय**

**राजेश कुमार शर्मा"पुरोहित"**

दूसरा सप्तक के कवियों में प्रमुख नाम रघुवीर सहाय का आता है। हिंदी के विलक्षण कवि,लेखक,पत्रकार,संपादक,अनुवादक,कथाकार,आलोचक।रघुवीर सहाय का जन्म 9 दिसंबर1929 को लखनऊ उत्तर प्रदेश में हुआ था।इन्होंने 1951 में अंगेजी साहित्य में स्नातकोत्तर किया। 1946 से साहित्य सृजन करना प्रारंभ किया। इनका विवाह 1955 में विमलेश्वरी सहाय से हुआ। इनकी प्रमुख कृतियाँ 'सीढ़ियों पर धूप में','आत्म हत्या के विरुद्ध','हँसो हँसो जल्दी हँसो','लोग भूल गए हैं','कुछ पते कुछ चिट्ठियां','एक समय था' जैसे कुल छह काव्य संग्रह लिखे। 'रास्ता इधर से है'(कहानी संग्रह),'दिल्ली मेरा परदेश' और 'लिखने का कारण'(निबन्ध संग्रह) उनकी प्रमुख कृतियाँ है। रघुवीर सहाय हिंदी के साहित्यकार के साथ साथ एक अच्छे पत्रकार थे,उन्होंने पत्रकारिता की शुरुआत लखनऊ से प्रकाशित दैनिक नवजीवन में 1949 से की। 1951 के आरंभ तक उप संपादक और सांस्कृतिक संवादाता रहे,उसके बाद 1951-1952 तक दिल्ली में "प्रतीक" के सहायक संपादक रहे। 1953-1957 तक आकाशवाणी के समाचार विभाग में उपसंपादक रहे।

रघुवीर सहाय की 'बारह हंगरी कहानियां' राख और हीरे शीर्षक से हिंदी भाषान्तर भी समय समय और प्रकाशित हुए। उनकी कविताओं के भाषा और शिल्प में पत्रकारिता का तेवर दृष्टिगत होता है। तीस वर्षों तक हिंदी साहित्य में अपनी कविताओं के लिए रघुवीर सहाय शीर्ष पर रहे। समकालीन हिंदी कविता के महत्वपूर्ण स्तम्भ रघुवीर सहाय ने अपनी कविताओं में 1960 के बाद की हमारी देश की तस्वीर को समग्रता से प्रस्तुत करने का काम किया। उनकी कविताओं में नए मानवीय सम्बन्धो की खोज देखी जा सकती है। वे चाहते थे कि समाज में अन्याय और गुलामी न हो तथा ऐसी जनतांत्रित व्यवस्था निर्मित हो जिसमें शोषण,अन्याय,हत्या,आत्महत्या,विषमता,दास्तां, राजनीतिक संप्रभुता,जाती धर्म में बंटे समाज के लिए कोई जगह न हो।

वे चाहते थे कि आजादी की लड़ाई जिन आशाओं और सपनों से लड़ीं गयी है उन्हें साकार करने में यदि बाधाएं आती है तो उनका विरोध करना चाहिए। उन्होंने उनकी रचनाओं का विरोध भी किया।

1984 में रघुवीर सहाय को कविता संग्रह (लोग भूल गए है) के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उनकी का कविताओं में आम आदमी को हांशिये पर धकेलने की व्यथा साफ दिखाई देती है। उनकी कविता की कुछ पंक्तियां देखिये:-

**जितनी बूंदे उतने जो के दाने होंगे**
**इस आशा में चुपचाप गांव यह भीग रहा है**

1982-1990 तक इन्होंने स्वतन्त्र लेखन किया। 'वे तमाम संघर्ष जो मैंने नही किये अपना हिसाब मांगने चले आते है' ऐसी पंक्तियां रचने वाले रघुवीर सहाय जन मानस में एक दीर्घजीवी कवि थे जिनकी कविताये स्वतन्त्र भारत के निम्न मध्यम वर्गीय लोगो की पीड़ा को दर्शाती है। नई कविता के दौर में रघुवीर सहाय का नाम एक बड़े कद के कवि के रूप में स्थापित हुआ था। 1953 में रघुवीर सहाय एक छोटी सी कविता लिखते है-

*वही आदर्श मौसम
और मन में कुछ टूटता सा
अनुभव से जानता हूं कि यह बसन्त है*

रघुवीर सहाय की अधिकांश कविताये विचारात्मक और गद्यात्मक है। वे कहते थे 'कविता तभी होती है जब विषय से दूर यथार्थ के निकट होती है'। रघुवीर सहाय भाषा सजक रहे है। उनकी भाषा बोल चाल की भाषा है। आदमी की भाषा में छिपे आवेश को बनाने का प्रयास रघुवीर सहाय करते थे।

भारत में आदमी की समस्याओं और विरोधी व्यवस्था में राजनीति तथा जीवन के परस्पर सम्बन्ध को बचाये रखने का प्रयास उनकी कविताओं में दिखाई देता है।

**-98,पुरोहित कुटी,श्रीराम कॉलोनी,भवानीमंडी,**
**पिन326502,जिला-झालावाड़**
**राजस्थान**

**रचनाकार - आशा पाण्डे ओझा** **प्रस्तुतकर्ता - प्रीति 'अज्ञात'**

**"साहित्य अब संकरी घाटी नहीं, एक विस्तृत मैदान है" - आशा पाण्डे ओझा**

"मैं सिर्फ कर्म करने में विश्वास करती हूँ, बिना फल की इच्छा किये। मेरा मानना है आप अपनी रचना प्रक्रिया में संलग्न रहें, आज नहीं तो कल कोई आपके विचारों से सहमत होगा, सराहेगा, उसें आत्मसात करेगा। किसी के तो काम आएगा, आपके शब्दों का नीड ! आप बस बुनते जाओ ! मैं
बड़ी किताबों में छपने या सम्मान पाने की होड़ में भी शामिल नहीं होना चाहती। बस एक तरह से आत्मसंतुष्टि के लिए लिखती हूँ । एक रेगिस्तानी अभावों में पला होता है, तो कम का ही आदी होता है ! आपने कुछ हासिल करने के लिए अपने चरित्र व उसूलों को गिरवी रखा तो समझिये जो भी हासिल किया उसकी बहुत बड़ी कीमत चुका दी आपने और उसके लिए आपका अंतर आपको कभी माफ़ नहीं करेगा। अपने उसूलों से समझौता किये बिना, जितना जिस पथ पर चल पाऊँगी, चलूंगी .. अनवरत। मेरा मुकाम है मेरी आन्तरिक ख़ुशी ! मेरे उसूलों के साथ जितना कुछ पा सकूं, उतनी ही ख्वाहिश ! माना आकाश में उड़ना आज हर किसी का मकसद है .. पर इस उड़ान में कैसे छोड़ दूं मैं, अपनी स्नेह भरी धरती ! मैं उड़ना चाहती हूँ अपनों के संग अपनत्व के संग ... रंग बिरंगे पंख .. ऊँची उड़ान नहीं दे सकते .. ऊँची उड़ान के लिए जिन्दगी का अनुभव जरुरी है .. जिन्दगी मेरे इर्द गिर्द है .. जो देती है मुझे उड़ान का हौसला भी ... कभी ममता, कभी माधुर्य, कभी दया, कभी करुणा, कभी स्नेह, कभी वात्सल्य ! ढेर सारी जिम्मेदारियां उसके बीच छोटे-छोटे सपने जो बहुत दूर नहीं ले जाते मुझे अपनों से ! दिली ख्वाहिश है बस जितना स्नेह मिल रहा है उतना ही मिलता रहे सबका !" यह कथन है, राजस्थानी पृष्ठभूमि में पली-बढ़ी चर्चित लेखिका और समाजसेविका आशा पाण्डे ओझा जी का !
अपने प्रदेश और उसके बाहर भी कई पुरस्कारों से सम्मानित आशा जी, कई वर्षों से महिलाओं और छात्राओं के उत्थान के लिए महत्वपूर्ण क़दम उठाती रही हैं। इन्होंने स्कूली दिनों से ही सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया था और वहीँ से इनकी लेखनी भी पल्लवित होने लगी थी ! इनके पति की सरकारी नौकरी और स्थानांतरण के कारण इन्हें विभिन्न स्थानों में निवास का अवसर मिला, इनकी दो प्यारी बेटियों भी हैं, अम्बुधि और पयोधि ! लेखन और

समाज सेवा के अतिरिक्त आशा जी कुकिंग, फोटोग्राफी और पर्यटन में भी विशेष रूचि रखती हैं। आशा जी के व्यक्तित्व और कृतित्व को जानने के लिए आइये पढ़ते हैं हमारी संपादक प्रीति ' से उनकी अनौपचारिक बातचीत के कुछ अंश -

**प्रीति-** किस घटना ने आपको उद्वेलित किया और आपकी लेखनी से पहली रचना जन्मी ?

**आशा पाण्डे -** जब मैं आठवी कक्षा में थी तब हमारे गाँव की एक लड़की को दहेज़ के लिए जला कर मार दिया गया था। उस घटना ने मुझे उस छोटी सी उम्र में भी बहुत झकझोरा। पूरे गाँव में ही दहेज़ लोभियों के खिलाफ एक आन्दोलन-सा चला। कई मंचों से उसका विरोध हुआ, गोष्ठियां हुई, मुझे उन आन्दोलनकारियों ने मंच से अपनी बात रखने के लिए जगह-जगह आमंत्रित किया। मेरी प्रधानाध्यापिका जी ने मुझे कुछ लिख कर बोलने के लिए, एक घंटा अपने ऑफिस में बैठा कर

अतिरिक्त टाइम दिया, उस रोज मेरी कलम से पहली कविता जन्मी 'दहेज़ का दैत्य',जो ग्यारहवीं में एक पत्रिका में छप भी गई। उसी दौरान एक आलेख भी छपा 'विधवा विवाह और हमारा समाज' यह दो रचनाएं इसलिए याद है कि यह बहुत चर्चा में रही, पर तब लेखन को साहित्य की तरह नहीं बल्कि स्कूल की गतिविधि की तरह लिया। प्राइवेट पढ़ते हुए लॉ भी कर लिया। लॉ के बाद, पापा ने प्रेक्टिस करने के मकसद से, जोधपुर भेज दिया। पर मन कहीं-न-कहीं से कवि था सो साहित्य में रमता रहा, रचनाएँ लिखती रही।

**प्रीति-** लेखन कार्य , बहुत ही सुकून और आत्म-संतुष्टि देता है। संभवत: इसीलिए न होते हुए भी, इसमें 'समय' कभी आड़े नहीं आता ! क्या आप भी यही सोचती हैं ?

**आशा पाण्डे-** हाँ, प्रीति जी ! मैं आपकी बात से पूर्णत: सहमत हूँ। कोर्ट में प्रेक्टिस करते हुए ही मैंनें हिंदी में प्रथम श्रेणी से एम .ए भी कर लिया। आज लिखते-लिखते लेखन की वो आदत हो गई कि लेखन मेरे मन का खालीपन भरता है। मन को सुकूं मिलता है। मेरे भीतर जब कोई अभाव कसमसाता है तब शायद रचना जन्म लेती है, मुझे पता नहीं चलता यह अभाव क्या है पर कोई रिक्तता होती है, कुछ उद्द्वेलित करता है। इन भावों की आत्यंतिक उत्कटता और विचारों का सघन प्रवाह मेरे शब्दों को आगे बढ़ाता है मेरी कलम में उतर आता है। कभी शब्द मुझमे थिरकन पैदा कर देते हैं,कभी जड़ बना देते हैं मुझे । क्षण -क्षण सघनतर होते हुए, विचारों के बादलों को बरसने से रोक नहीं पाती हूँ तो कलम उठानी ही पड़ती है, समय किसी तरह निकाल ही लेती हूँ।

**प्रीति -** यूँ तो रचनाकार का हृदय संवेदनशील होता है और उनकी क़लम लगभग हर विषय पर ही सहजता से सृजन करती है ! परन्तु फिर भी हरेक की एक पसंद भी होती है, जिसमें लिखना उन्हे हमेशा ही सुहाता रहा है। आपके साथ भी ऐसा ज़रूर होता होगा !

**आशा पाण्डे-** मूलत: मेरी रचनाएँ समसामयिक विषयों पर ज्यादा होती है। हमारी सोच पर तत्कालीन परिस्थितियों का भी प्रभाव रहता है। कुछ रचनाकार सदैव निजी व स्वतंत्र सोच व्यक्त करते हैं। कुछ परिस्थितिवश सोच बदलते भी हैं। परिस्थितियों का प्रभाव लेखक वर्ग पर भी पड़ता ही है आखिर हैं तो वो भी सामाजिक जड़ों की ही देन। इसलिए सामाजिक मुद्दे मेरी रचनाओं के

विषय ज्यादा बनते हैं ,पर प्रेम कविता लिखने में खुद को बहुत सहज पाती हूँ। प्रेम जो मानव की स्वाभाविक प्रक्रिया है और संसार को खूबसूरत बनाता है ! प्रेम जब रगों में दौड़ने लगता है, नफरतें सुप्त हो जाती हैं। प्रेम से पूर्ण हृदय क्रोध से तो भर सकता है, क्षणिक आवेश में भी आ सकता है पर विनाश किसी का नहीं कर सकता । दूसरी बात यह भी है कि मेरे द्वारा लिखी प्रेम कविताएँ पाठकों द्वारा ज्यादा सराही गई तो अब वही लिखती हूँ ज्यादा ।

**प्रीति '-** आप, छंदमुक्त कविता के अलावा और किस विधा में लिखना पसंद करती हैं ?

**आशा पाण्डे-** छंद मुक्त कविता के अतिरिक्त व्यंग ,शोधपत्र , कहानी,आलेख लिखना मुझे अच्छा लगता है पर मैंने हाइकु ,दोहा ,गीत ,ग़ज़ल ,निबंध सब लिखा है। सब में आनंदित महसूस करती हूँ हिंदी के साथ साथ राजस्थानी में लिखना भी उतना ही सुकून भरा है मेरे लिए।

**प्रीति-** आप राजस्थानी और हिंदी, दोनों ही भाषाओं में लिखती हैं, तो किस भाषा में आप ज्यादा सहज महसूस करती हैं ?

**आशा पाण्डे-** मैं हिंदी, राजस्थानी दोनों के साथ बहुत सहज हूँ। दोनों ही मेरी रगों में है बल्कि बचपन छत्तीसगढ़ में बीता तो पढने समझने में छत्तीसगढ़ी भी मेरे लिए सहज है। बस अभी तक लिखा नहीं है, इसमें। राजस्थानी में भी छुटकर बहुत लिखा है पर अभी तक कोई संग्रह नहीं आया। अब अगली तैयारी वही है।

**प्रीति-** आपके पहले साझा काव्य-संग्रह का अनुभव कैसा रहा ? प्रकाशन की सलाह किसने दी ? किस तरह का सहयोग मिला ? कुछ स्थापित रचनाकारों द्वारा नए लेखकों को हतोत्साहित भी किया जाता रहा है, उनके बारे में आपका क्या कहना है ?

**आशा पाण्डे-** एक बार 'राजस्थान पत्रिका' के साहित्य अंक में जाने माने साहित्यकार जबरनाथ पुरोहित जी का बहुत प्यारा गीत छपा। जिसके बोल आज तक मेरे कानों में ठहरे हुए हैं -

"गगन चुम्बी प्रसादों में मन में पलते
अवसादों में मेरा मन घुटता जाता
मुझको मेरा आँगन दे दो"

उस गीत के नीचे जबरनाथ जी सर के फोन नंबर भी थे। मैंने बिना किसी हिचकिचाहट के एक प्रशंसक की तरह उन्हें फ़ोन किया। पता नहीं कैसे, उनको मेरे बातचीत के लहजे से पता चल गया कि मैं भी लिखा करती हूँ.. पूछा "आप भी लिखती हैं ना ? " "जी सर! पर कोई खास नहीं ,मैं अपनी संतुष्टि भर के लिए लिखती हूँ .., पर जो लिखती हूँ एक बार आपको दिखाना चाहती हूँ ..। "

उन्होंने कहा "जब भी जोधपुर आओ घर जरुर आना .. , व अपनी डायरियां लाना ..!"

कोई एक माह बाद जोधपुर जाना हुआ। उनसे रूबरू मिलने का पहला मौका भी। सर ने बड़ी आत्मीयता से स्वागत किया। डायरियां अपने पास रख ली। दो दिन बाद फ़ोन आया "काफी अच्छा लिखती हैं आप, किताब क्यों नहीं निकलवाती ?" मैंने कहा "सर, मुझे नहीं पता कैसे छपती है? कहाँ से छपती हैं ..?" उन्होंने मेरी कविताओं पे टिक लगा दिए कोई महीने भर बाद वापस गई तब बीकानेर के अंशु पब्लिशर्स से खुद बात की, मेरी बात करवाई व कहा यह कविताएँ टाइप करा कर या हाथ से साफ़ लिख कर एक पाण्डुलिपि तैयार करलें ..और कभी समय निकाल कर बीकानेर चली जाएँ। उनके इस आत्मीय सहयोग

की वजह से मेरा पहला कविता संग्रह 'दो बूँद समुद्र ' आया। उसकी भूमिका भी जबरनाथ जी सर ने लिखी थी उसके विमोचन में भी आये। उन्ही से मैंने सीखा कि कोई भी नवोदित साहित्यकार आपके सामने अगर उम्मीद भरी नजर से देखे तो आप उसें कभी अनदेखा न करें, उसके कन्धों पर आत्मीयता का हाथ रखें। वो आपकी अगली पीढ़ी है जिसके भीतर आप जिन्दा रहोगे,न रहने के बाद भी। जैसे जबरनाथ जी सर का नाम आज भी है मेरे ज़हन में..सदा रहेगा !

**प्रीति -** स्त्रियों के लिए विवाह के बाद लेखन-कार्य कभी आसान नहीं हो पाता ! असंख्य सवालों-जवाबों के दौर से ऊबकर या यूँ कहूँ कि टूटकर, अक़्सर ही वो अपने लेखन को कहीं पीछे छोड़ आती है ! पर लेखन, फिर भी साथ नहीं छोड़ता और अवसर पाते ही पुन: कुलबुलाने लगता है ! आप भी इस दौर से अवश्य ही गुजरी होंगी ! यदि उचित समझें तो, हमारी महिला लेखिकाओं के लिए, अपनी बात साझा करें !

**आशा पाण्डे -** वैसे तो ज़िन्दगी किसी के लिए आसान नहीं है परन्तु फिर भी नारी के लिये कुछ ज्यादा मुश्किल है। कहने को सृष्टि की रचयिता है नारी ..पर इसके हाथ में स्वयं की डोर नहीं ! ज़िन्दगी के विभिन्न किरदार निभाती हुई खुद के अस्तित्व से ही अनजान रह जाती है। दूसरों को सदा बेहतर राह दिखाने वाली खुद दिशाविहीन ही रहती है, अपने रिश्ते नाते, संवारती, समेटती खुद कितना टूट चुकी है खुद ही नहीं जानती। सहनशीलता, ममता , त्याग इन गुणों की दुहाई दे दे कर, उसें हमेशा आगे बढ़ने से रोका गया ,बात बिन बात टोका गया ! वो खुद भी कभी घर के टूटने के भय से, कभी लोक लाज की वज़ह से, खुद को मिटाती रही, खुद से अनजान बनी रही। मैं भी कभी खुद के सपनों को नहीं जी पाई थी, मैंने भी जिन्दगी को एक लम्बे विराम के बाद फिर से जीना शुरू किया !अपने फ़र्ज़ और जिम्मेदारियों की भीड़ में चुपके -चुपके सिसकती अपनी ख्वाहिशों की सिसकियां सुनी। अपने टूटते हुए सपनो की आह महसूसी, सोचा ये मर गये तो ज़िन्दगी की लाश ढो कर भी क्या फ़ायदा !चलो औरों के लिये जीते-जीते ही, कुछ साँसे अपने लिये भी ले ली जाये। मैंने लॉ किया पापा की ख़ुशी के लिये मैं तो थी कविहृदया !

ख्वाबों की पक्की ज़मीन पर मेरा मन कल्पनाओं के सुन्दर घर बनाता रहता है, हर वक्त मेरी कल्पनाएँ सुन्दर सृष्टि का ,सुखद भविष्य का , अति प्रिय वर्तमान का सृजन किया करती है | बचपन से ही अति भावुक थी और इसी भावुकता की वजह से मन यथार्थ को बर्दाश्त नहीं कर पाता और इस जीवन उदधि में अनगिनत कल्पनाओं की तरंगे हिलोरें मारती रहती है, अनजाने दर्द में रोती है, अनजानी खुशी में खुश होती है | कवि मन कल्पनाओं के सुन्दर आकाश में उड़ता, सच और झूठ के धरातल पर कितना टिकता ! मैंने वक़ालत छोड़ी ससुराल वालों की ख़ुशी के लिये, लिखना छोड़ा अपने घर -परिवार को बेहतर तरीके से संभाल पाने के लिये पर शादी के बाद तो दस साल पूरी तरह से लिखना छोड़ दिया क्योंकि ससुराल वाले इसें ठीक नहीं समझते थे। पति समझाते भी .. जिसें जो सोचना है वो सोचता रहे तुम वो करो जो तुम्हे सुकूं देता हो पर उनकी बात समझते-समझते दस साल लग गये । हिम्मत जुटाते-जुटाते अरसा गुज़र गया। इस बीच जाने कितने ख़याल जल -जल कर बुझे होंगे, कितनी कल्पनायें जग -जग कर सोई होगी, कितने अहसास मिट गए होंगे ! अंदाज़ा लगाना

मुश्किल है। पर मुझे ठीक से याद है जितना वक़ालत छोड़ कर दुखी नहीं हुई, उतना टूटी थी जब अपनी लेखनी का गला दबाया था ! लेखनी जो की मेरी धडकनों में बसती थी ! मेरी प्राणवायु थी उसके बिना दस साल गुजारे मैंने, आज सोचकर ही तड़प उठती हूँ । औरों की ख़ुशी के लिये खुद को मिटा देना समझदारी नहीं बल्कि कमजोरी है। ऐसे समझोते कभी मत करो जो आपके वजूद को मिटा दे ! आज जब पति, बच्चों व दोस्तों की प्रेरणा से फिर लिख रही हूँ तो लग रहा है सच जीना

सार्थक हुआ है । गुजरा वक्त लौट कर तो नहीं आता पर एक दरवाज़ा उस तक पंहुचता तो है ..वक्त के बिम्ब झांकते हैं उस दरवाजे से ..अपने आपको पूर्ण होता हुआ देख कर एक इत्मीनान की सांस लेते हैं।

**प्रीति-** जी, आपके एक-एक शब्द से सहमत हूँ। आपने अनजाने में न जाने कितनी स्त्रियों के अहसासों को अभिव्यक्ति दी है, अभी ! अपने अस्तित्व के साथ समझौता करना, स्वयं को समाप्त कर देने जैसा ही है। ये बात 'नारी' जितनी जल्दी समझ ले, उतना ही बेहतर..... क्योंकि आपके सुख से दुखी होने वाले लोग तो कोई-न-कोई वज़ह फिर भी ढूंढ ही निकाल लेते हैं और कुंठाग्रसित होकर आक्षेप या तानों से बाज़ नहीं आते ! आप सचमुच ख़ुशक़िस्मत हैं कि आपके, 'अपने' आपको प्रोत्साहित करते हैं ! उन्हीं के लिए, अपनी पसंदीदा कविता कहें !

**आशा पाण्डे -** खुद की रचनाओं में से पसंद-नापसंद छांटना..कितना दुष्कर है जो कुछ लिखती हूँ दिल से लिखती हूँ। दिल से निकला सब कुछ, दिल के करीब ही होता है पर कुछ छोटी-छोटी रचनाएँ कुछ दोहे यहाँ रखना चाहूंगी -

बदली कितनी बस्तियाँ, बदले कितने फर्द।
लेकिन पीछे आ गया, पीछा करता दर्द।।
नारी सागर प्रेम का,पर्वत प्रण का ठोस।
दुनिया को ये पोषती, बनकर जीवन ओस।।
दरिया अपनी ज़िंदगी, साँसे लहर उत्ताल।
सुख दुख हैं जलचर प्रिये,रिश्ते सारे जाल।।
मैं सहरा की रेत थी, तू दरिया का नीर।
दोनो को ढोनी पड़ी ,अपनी अपनी पीर।।
उम्र सुराही में भरा जितना रब ने नीर ।
उतना पीकर चल पड़ा, आगे साँस फकीर ।।
सुन री आशा बावरी,मत कर कोई आस ।
जीवन यह बाजार है, सौदा अपनी साँस।।
जब तक मुझमे "मैं" रहा, दूर रहा भगवान ।
ज्यों ही मैंने "मैं" तजा,तुरत मिला वो आन।।

रचनाएं-

"अपने मरने के बाद/किसी को/दान में दे जाना चाहती थी/मैं अपनी आँखें/ ताकि मेरे मरने के बाद भी/देख सके/इस खूबसूरत जहान को/ये मेरी आँखे/पर अब नहीं देना चाहती किसी को/किसी भी कीमत पर/मैं अपनी आँखें/यह बहता लहू/ये सुलगते मंजर/मेरे मरने के बाद भी/क्यों देखे /बेचारी मेरी आँखें"

"नव पीढी तुम इस देश का संबल बनो /माहौल कीचड़ है तो क्या,तुम कमल बनो "

"ना दुत्कारो/ रात का अँधेरा /कहकर मुझको / जन्मता मेरी ही कोख से
तुम्हारे घर का उजाला"

"मोम को आंच जरा दी तो पिघल जाएगी /जिस तरह से ढालोगे लड़की को वो ढल जाएगी"

अपने किरदार को आइना दिखाते रहिये /सूरत वतन की खुद ही बदल जाएगी "

"हर क़दम एक डर-सा लगता है /आदमी क्यूं शरर सा लगता है"
"मुहब्बत / दीपशिखा / नदी का प्रवाह / तीनों में कितनी है समानता / जब तक मिट
ना जाये अस्तित्व / थमने का नाम नहीं लेती / तीनो" और अब तक लिखी कुल छह कहानियों में कहानी 'ढिगली' भी मेरे दिल के बहुत करीब है

**प्रीति -** आप कई वर्षों से सामाजिक कार्यों में संलग्न हैं, उनके बारे में बताएं।

**आशा पाण्डे -** समाज सेवा का दौर तो एक तरह से स्कूल से ही शुरू गया था क्योंकि यह आदत पापा-मम्मी में भी थी। पापा ने ओसियां में एक संस्था बनाई थी, जिसमें उन अभावग्रस्त बच्चों को पढ़ाने की जिम्मेदारी उठाना व सरकार से मदद दिलाना उस संस्था का उद्देश्य था ,जो बच्चे अभावों के चलते पढाई बीच में छोड़ देते थे । पापा नहीं रहे संस्था बाकि लोग कैसे चलाएंगे नहीं जानती पर पापा के मकसद जो भी थे, वो मेरी सामर्थ्य के अनुसार पूरा करने का हर संभव प्रयास करूँगी। कभी बाढ़ पीड़ितों की लिए कार्य किया, कभी भूकम्प पीड़ितों के लिए। कभी कन्या भ्रूण हत्या रोकथाम , कभी ब्लड डोनेशन । बस जितना सम्भव था। वो करती गई बिना अच्छा भला। विचारे।

जैसलमेर, पोकरण में मेरा लेखन कम हो कभी बाढ़ पीड़ितों की लिए कार्य किया, कभी भूकम्प पीड़ितों के लिए पाया व समाज सेवा के दौर ने गति पकड़ी वहां के कलेक्टर साहब श्री कृष्ण कान्त पाठक जी भी हमें हर काम में जोड़ते। एक दिन बुला कर पूछा पाण्डे जी मेरा विचार है विवाह पंजीकरण का कैप लगाया जाए। आप एक दिन में कितने रजिस्ट्रेशन करवा पाएंगी मैंने कहा सर हजार .. और सचमुच हमने एक दिन में एक हजार आठ रजिस्ट्रेशन करवा दिया। उस केम्प में यह जैसलमेर की जनता के सहयोग से संभव हुआ, मीडिया का भी पूरा सपोर्ट रहा।

**प्रीति -**स्त्रियों और प्रतिभाशाली छात्राओं को प्रोत्साहित करने के लिए किये गए प्रयासों की विस्तृत जानकारी दें।

**आशा पाण्डे -** एक तो खुद छोटे गांव, ओसियां से होने की वजह से बचपन से आसपास देख रही थी कि लड़के-लड़की में हर घर में बहुत भेद-भाव बरता जाता है, मन इस बात का विरोध करता था पर जब पोकरण व जैसलमर पति की पोस्टिंग हुई तब जाना जैसलमेर जिले में कन्या भ्रूण हत्या का प्रचलन शायद पीढ़ियों से रहा है/था, वो आज भी कायम है इस बात को मैंने महसूस किया। कन्या भ्रूण हत्या रोकथाम के लिए भी, पोकरण जैसलमेर में काम करने के कुछ छोटे-छोटे प्रयास किये 2006 से प्रतिभावान कन्याओं , व महिलाओं के सम्मान का सिलसिला शुरू किया वहां के लोगों के यह ध्यान में लाने के लिए कि बेटियां, बेटों से कम नहीं है।उसका असर भी हुआ। दूसरे कार्यक्रम में तो वहां की महिलाएं खुद आगे आकर मेरी मदद करने में जुट गईं । मैं पांच हजार निकालती तो चार अन्य महिलाएं भी उसमें जुड़ती, कहती हमारा भी हिस्सा रखो, अच्छा कार्यक्रम करो।मैंने चार साल खूब काम किया, मैं मानती हूँ कि लोगों में जागरूकता भी आई। समाज सेवा का सिलसिला पिंडवाड़ा में भी बहुत गति से चला अच्छी टीम मिली युवा टीम।

**प्रीति** '- सुना है,आप जो भी आयोजन करती हैं , उसके लिए कभी अनुदान नहीं लेतीं। इस बारे में कुछ कहें।

**आशा पाण्डे** - हाँ मैं अब कुछ आयोजन करती हूँ तो किसी से सहयोग नहीं लेती। जैसलमेर,

पोकरण में कार्य करते हुवे अच्छे अनुभवों के साथ बुरा अनुभव भी हुआ। कुछ लोग पांच सौ या हजार का सहयोग करके आपको खरीदने की कोशिश करते हैं। ऐसे लोगों से बचने का तरीका आप उतना ही काम करो जितना आपकी जेब अनुमति दे। मैं बहुत स्पष्टवक्ता भी हूँ, गलत लोगों को झेल नहीं पाती, अत: जितना खुद से कर पाऊँगी, करती जाऊँगी।

**प्रीति -**पढ़ाई के साथ-साथ खेलकूद में भी आपकी काफ़ी रूचि रही है !

**आशा पाण्डे -** जी, वैसे तो मेरा विद्यार्थी जीवन बहुत सामान्य-सा ही था ,परन्तु साथ ही दूसरे क्रियाकलापों जैसे खेल-कूद ,सांस्कृतिक कार्यक्रमों में हमेशा मैं अव्वल रही । हाई जम्प,लॉन्ग जम्प और खो-खो में तो राज्य स्तर तक तीन बार चयन हुआ लेकिन विडंबना यह रही कि घर के बुजुर्गों की सहमति नहीं बनने से ,बाहर बहुत दूर खेलने नहीं भेजा गया। हालाँकि जोधपुर तक तो जितनी बार जरूरत पडी अकेले भेजा। देखा जाय तो बुजुर्गों का डर वाजिब भी था। नर्सरी से लेकर ग्याहरवी तक कुल पांच स्कूलें बदलीं, उसके बाद कॉलेज, सभी में सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं खेल-कूद में प्रतिनिधित्व किया । नवमीं कक्षा के बाद तो पढाई को भी उतना ही महत्वपूर्ण समझा, उससे पहले तो खेल-कूद में इतने व्यस्त रहते थे कि परीक्षा की बस खानापूर्ति भर ही होती थी। पर बहुत कम समय के लिए पढ़ कर भी नंबर ठीक ठाक आ जाते थे तब अदिकतम अंक 60/62 प्रतिशत बना पाते थे बच्चे .. 55 के आस पास मैं भी ले ही आया करती थी ।

**प्रीति -** आप अपने पिता के बहुत करीब थीं और उन्हें अपना आदर्श भी मानती है, उनके व्यक्तित्व का आपके ऊपर कितना प्रभाव पड़ा और कैसे ?

**आशा पाण्डे -** वैसे तो मैं हर उस इंसान को अपना प्रेरणास्त्रोत मानती हूँ जिसमें जोश है, ज़ज्बा है, जूनून है ,जिद्द है ,ईमानदारी है उसूल हैं या जिससे मैंने अंशमात्र भी कुछ सीखा है,पर मेरे पिता बचपन से मेरे प्रेरणास्त्रोत रहे है और दिल के भी बहुत करीब भी। हमारे पापा, माँ के होते हुए

भी माँ से भी ज्यादा हमारे प्रति माँ और पापा दोनों की भूमिका निभाते रहे। हर अच्छाई बुराई पर ध्यान देते, बुरा भला समझाते ! हमें कैसे उठना चाहिए , बैठना चाहिए, बोलना चाहिए, हमारी स्कूल

यूनिफार्म साफ़ सुथरी है या नहीं ? बैग व्यवस्थित हैं कि नहीं ? होमवर्क किया कि नहीं ? सब पापा ही देखते ! उस ज़माने में जब यह सब काम पुरुषों का करना बड़ा ही हीन दृष्टि से देखा जाता था पापा ने बिना हिचक किया ! पापा अच्छे कुक भी थे, सारी मनपसंद चीजें बना कर खिलाते .. पापा ने हम सात बहनों से कभी एक बार भी यह नहीं कहा इतनी बेटियां क्यों है ? पूरे गाँव में सबसे ज्यादा अच्छा हमें रखा गया, अपने सामर्थ्य से ज्यादा हमें सुख सुविधा देने की कोशिश की ! पापा बहुत दयालु पर हमेशा से ही बहुत अनुसशासन व उसूल पसंद रहे है। उनके दिए संस्कार ही मुझे जीवन पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं । बचपन से ही उन्होंने हम बहनों को अपने दवा के व्यवसाय से भी जोड़ा ताकि हम कुछ सीख पायें । उस ज़माने में जब लड़की का जन्मना भी बोझ व अपराध समझा जाता था लड़कियों को भेड़बकरी से ज्यादा महत्व नहीं दिया जाता था ,पढाया लिखाया नहीं जाता था तब पापा हमारे प्रति बहुत प्रवाह , सार संभाल,व प्रेम से भरे थे। अपने मोटर

साइकिल व स्कूटर की चाबी मुझे दे देते थे, जब लड़कियां घर से बाहर नहीं निकल पाती थी , मेरे बॉय कट बाल रखते जब लड़कियों को छोटी गूंथना अनिवार्य था ! जींस पहनाते, जब लड़कियां घाघरे ओढने में लिपटी रहती, इसके लिए उन्होंने अपने बुजुर्गों का, अपने रिश्तेदारों का,अपने समाज का विरोध भी सहा। पर कभी हारे नहीं, हर काम में हमें आगे कर देते। कभी अविश्वास नहीं दिखाया !आठवीं कक्षा से तो मैं स्कूल के पहले व बाद दोनों टाइम नियमित दो -दो घंटा दुकान पर जाकर पापा का हाथ बांटती थी उनके साथ रह कर बहुत कुछ सीखा। सबसे बड़ी सीख ली उनसे विपरीत परिस्थितियों में भी कभी घबराना नहीं व उसूलों पर अडिग रहना, ऊपर से बहुत कठोर दिखने वाले पापा बहुत नर्म दिल थे, बिलकुल नारियल की तरह, वही हर पग पर मेरा आदर्श हैं मेरी प्रेरणा हैं ।

**प्रीति -** सचमुच आपके पिता बेहद उम्दा व्यक्तित्व के स्वामी थे, आज भी हमारे समाज को ऐसे पुरुषों की, ऐसी सोच की अत्यंत आवश्यकता है। परिवर्तन की शुरुआत घर से ही होती है, आपके पिताश्री इसका एक बेहतरीन उदाहरण हैं ! पत्रिका परिवार उन्हें शत-शत नमन करता है !

**आशा पाण्डे -** धन्यवाद प्रीति जी ! पिता से जुड़ा हर पल संस्मरण है, कभी लिखूंगी उनकी बायोग्राफी ...मेरे दिल के बहुत करीब...अति करीब थे पिता .. पिछले पांच सात सालों में मैं उनकी मां बन गई वो मेरे बच्चे .. ।पूछते थे तूं मेरी माँ है क्या ? मैं कहती, हाँ पापा मैं आपकी मां हूँ अब। लेकिन एक दिन अचानक पापा चले गए ब्रेन हेमरेज के बाद 13 दिन हस्पताल में भर्ती पापा का पल-पल जाना देखा, अपने से हाथ छुड़ाना देखा .. उन दुखद पलों की कटु स्मृतियाँ अंतर को झकझोर देती है उनके जाने के बाद फिर सात आठ माह लेखन छोड़ा ..हँसना ..गाना ,गुनगुनाना सब छूटा , पर वक़्त का मल्हम बड़े सा बड़ा घाव भर देता है। घाव भरा तो नहीं पर मैंने उस पर एक परत व्यस्तता की चढ़ा ली सिर्फ पापा की आत्मा की शांति के लिए ओर पापा के उसूल आदर्शों को मूर्त रूप देने के लिए अब मैं समझ गई कोई तब। तक नही मरता जब तक उसे जिंदा रखने वाली सोच न। मरे। पापा आब मेरी सोच में जिंदा हैं।

**प्रीति -** '.आप पहले से ही सामाजिक कार्यकर्ता हैं। इसके अतिरिक्त आप और किस तरह से योगदान करना चाहती हैं ?

**आशा पाण्डे -** देश और समाज के लिए अपनी सामर्थ्य से जितना योगदान कर सकती हूँ उतना जरुर करुँगी। उसके लिए निजता कभी आड़े नहीं आएगी पर देश, समाज से ऊपर उठकर मानवता के लिए सोचती हूँ। उसी के लिए हरदम तत्पर हूँ। जहाँ मानवता को बचा सकूं। देश ,समाज ,जाति,धर्म की सीमाओं से ऊपर उठकर मानवता प्रथम उद्देश्य .. फिर देश।

**प्रीति -** आज का युवा-वर्ग के कहीं प्रगतिवादी और नई सोच का दिखता है तो कभी उनकी हरकतों से ह्रदय शर्मसार हो उठता है ! आप उनके लिए क्या सन्देश देना चाहेंगीं ?

**आशा पाण्डे -** आज के युवा वर्ग के लिए बहुत सी बातें हैं जो बेबाक कहना चाहूंगी। सबसे पहले कि वे किसी भी समाज से हों पर कट्टरता का त्याग करे। धर्म, क्षेत्र ,समाज के दायरों से बाहर निकलें। देश हित की सोचें, मानव कल्याण की सोचे और भारत के उन संस्कारों को सहेजे जिसकी वजह से पूरा विश्व भारत की तरफ आकर्षित होता आया है

,वो है स्त्री अस्मिता की रक्षा ,स्नेह, भाईचारा, मर्यादित आचरण .. जिसका इन दिनों लोप सा हो रहा है।

**प्रीति -दे**श में हिन्दी साहित्य के हालातों को लेकर आप कितनी आशान्वित हैं ?

**आशा पाण्डे -** हिंदी साहित्य के, बहुत सारी गुट बाजियों ,खेमों में बंटे होने के बावजूद भी कहूँगी कि हालात बहुत सुधर गए हैं। आज साहित्य लेखन किसी की बपौती नहीं रहा, अब हर वह शख्स लिख सकता है ,जिसमे लिखने का हुनर है .. हर वो रचनाकार छप सकता है जो अच्छा लिखता है।

लेखन सीमाओं से मुक्त हुआ है। **साहित्य अब संकरी घाटी नहीं, एक विस्तृत मैदान है जहाँ हर रोज़ नई प्रतिभाओं का मेला लगा रहा है मेले में आप अपनी क्षमता का प्रदर्शन कीजिये आपकी प्रतिभा स्वीकारी जायेगी**। नई पीढ़ी तेजी से उभर कर सामने आ रही है साहित्य गाँव क़स्बा शहर ,जांतपांत क्षेत्र से भी मुक्त होकर बिना भेद भाव के एक स्तर पर खड़ा है। आज हर लेखक को उनके अनुरूप मंच उपलब्ध हैं हिंदी में आज बहुत लेखन हो रहा है। गैर हिंदी भाषी राज्य भी हिंदी समझने लिखने पढने लगे हैं राष्ट्रभाषा के गौरव को समृद्ध करने ,पहचान दिलाने में सब एकजुट से नजर आने लगे हैं हालांकि राष्ट्रभाषा को राष्ट्रभाषा घोषित किये जाने के पीछे उस भाषा का साहित्य नहीं बल्कि यह देखा जाता है कि उस भाषा को कितने विशाल स्तर पर जन मानस द्वारा बोला, लिखा पढ़ा व समझा जाता है,परन्तु उस भाषा को विकसित व लोकप्रिय बनाने में साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उस दृष्टि से भी मैं आशान्वित हूँ !

**प्रीति-** आज साहित्य में हो रही आक्षेप बाजी,अखाड़ा बाजी ओर एक दूसरे लेखक के प्रति दुर्भावना पूर्ण बातें या वक्तव्य जारी करना क्या उचित है? क्या आपने भी महसूस की ये बातें।

**आशा पांडे-** जी प्रीति जी साहित्य में इन दिनों सुखद बदलाव के साथ कुछ दुःखद बदलाव भी तेजी से हुवे। सोशल मीडिया की बदौलत जिस तरह गांव गली से निकले लेखकों को एक पहचान मिली, एक प्लेट फॉर्म मिला,उनकी प्रतिभा का आंकलन हुआ , पर्याप्त मान सम्मान मिला उतना कहीं न कहीं साहित्य में आरोप, प्रत्यारोप भी लगने लगे। लोग हर कुंठा को व्यक्त करने लगे, अपनी दमित इच्छाओं को सोशल मीडिया पर प्रकट कर उसे लेखन का नाम देने लगे। जबकि कुंठा या अवसाद ग्रस्त लेखन कभी विशुद्ध सहिय नहीं हो सकता, भड़ास कभी भी कविता नहीं हो सकती, अखाड़ेबाज कभी साहित्यकार नहीं हो सकता, साहित्यकार को इन निम्न कोटि की ओछी हरकतों से बचना होगा, आज नई पीढ़ी का साहित्यकार, बिंदास हुआ हूं, बेबाक हुआ है और अधिक खुल कर आया है पर एक मर्यादा का आवरण, एक तहजीब का पर्दा उसे रखना होगा। उसे अपनी पहचान बनाने के लिए येन, केन, प्रकारेण, से परे एक उचित मार्ग चुनना होगा, सम्भलना होगा। साहित्य को पूर्वाग्रह से ग्रसित होने से बचाना होगा। साहित्य को विचार शील, विवेक शील, संवेदनशील बने रहना होगा।

**प्रीति-** हमारी पत्रिका के लिए कोई सन्देश?

**आशा पांडे -** आप सभी युवा लोग हैं, आपमें अदम्य साहस है, एक दृढ़ इच्छा शक्ति है , अटूट उत्साह है आपसे बहुत सारी उम्मीदें है, संभावनाएं हैं, आप साहित्य का भविष्य हो, आप लोगों की मेहनत, लगन व सोच आने वाली पीढ़ियों के लिए

प्रेरणा बने , ऐसे काम करना ! साहित्य के आँगन में बिना किसी भेद भाव गुट बाजी व अखाड़ाबाजी के विशुद्ध विचारों के साथ उन्मुक्तता ,स्वच्छता से विचरना, इसे पावन बनाये रखना जहां कुछ पुरातन ज़र्ज़र परिपाटियों को तोड़ने का संकल्प लेना होगा वहीं कुछ सुसंस्कृत , सास्वत , सात्विक पुरातन परिपाटियों को सहेजना होगा !

**प्रीति-** आज राजनीति का व उसके स्तर पर कुछ कहना चाहेंगी?

**आशा पांडे-** बहुत उम्दा प्रश्न है प्रीति जी क्योंकि राजनीति साहित्य से विलग होते हुवे भी कहीं न कहीं साहित्य से जुड़ी हुई है। साहित्य से संसार विलग नहीं संसार से राजनीति ।अधिकतर लोग कहते हैं साहित्यकार को राजनीति से दूर रहना चाहिए। साहित्यकार के राजनीति से दूर रहने से ही तो राजनीति इतनी, विकृत, विक्षिप्त हो चली है वहां समझदारों की कमी जो पाई गई, वहां संवेदनशील हृदय जो नहीं, वहां लालच ओर लालसा लिए हुवे लोग आते हैं सिर्फ़ जबकि साहित्यकार लालच और लालसा विहीन सामाजिक प्राणी है, उसमें संवेदनाएँ जीवित है, उसका राजनीति में हस्तक्षेप ही राजनीति को विकृत होने से बचा सकता है। हैं मेरे एक अनुरोध है साहित्यकार को पार्टी विशेष का मोह तजना होगा उसे राजनीति के गलियारों में फैली गंदगी पर अपनी कलम का झाड़ू चलाना होगा उसे मोहमुक्त होकर राजनीति की सच्चाई को उजागर करना होगा।

**प्रीति-** देश के वर्तमान हालत, जातिगत समस्याएं आरक्षण, रोजगार जैसी समस्याओं पर कोई सुझाव?

**आशा पांडे-** चुप रहूँ हालात ऐसे नहीं, बोलूं हालात ऐसे भी नहीं- फिर भी सुझाव तो हैं युवा पीढ़ी के हर युवा के लिए एक सुझाव कि वो इन राजनीतिक मुद्दों से ऊपर उठकर देश को सरवोपरी समझे, मानवता को सर्वोपरी समझे। भाई चारे को सर्वोपरी समझे। हालात व परिस्तिथियाँ कैसी हो समझौता न करे जाँत- पाँत से ऊपर उठे, व्यक्तिगत लाभ से ऊपर उठे, एक बेहतरीन समर्पित नागरिक बने, राजनीति की दियासलाई से देश की एकता अखण्डता को सुलगाने वालों के गाल पर एक तमाचा बने एकता, एकजुटता, प्रेम की नदी बनकर। रोजगार की समस्या का समाधान नोकरी ही हो जरूरी नही लघु, कुटीर उधोग में बहुत सम्भावनाएं है। युवा शक्ति अपनी ताकत, अपना जोश, अपनी ऊर्जा, अपनी बुद्धि जरा भी फिजूल बातों में खर्च न होने दे तो भारत को विश्व मानचित्र पर पुनः सिरमौर होने से, अग्रणी होने से दुनियां की कोई ताकत नहीं रोक सकती। आज राजनैतिक पार्टियों द्वारा देश के हर युवा को बरगलाया जा रहा है हर पार्टी उन्हें अपने झांसे में लेने का प्रयास कर रही है उनको इस्तेमाल का सामान समझ रही है। युवाओं को सम्भलना होगा।

**प्रीति-** हम जितना नारी स्वतन्त्रता की बातें कर रहे हैं नारी अस्मिता पर उतना खतरा मंडराया है क्या आप सहमत हैं कोई सुझाव?

**आशा पांडे-** आज देश की तरक्की में देश की इस आधी आबादी का पूरा सहयोग है। सारे सामाजिक पारिवारिक कर्तव्यों का निर्वहन करती हुई वो शिक्षा, चिकित्सा, प्रसाशन, खेल, फ़िल्म, उधोग, मीडिया, लेखन, फ़ौज अंतरिक्ष, राजनेतिक हर क्षेत्र में अपने जलवे बिखेर रही है। आज वो अबला, निरीह, बेचारी, मूक या केवल माँ, बहन, बेटी माशूका नहीं रही अब वह देश ई भाग्य विधाता। भी है घर से बाहर निकली और अपने, ज्ञान,

अपनी ताकत, अपने समर्पण , धैर्य , विवेक अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया लेकिन बावजूद इस सबके उसके अस्तित्व पर उसकी इज़्ज़त पर कई खतरे मंडराए आये दिन निर्भया जैसे कांड इस बात का सबूत है कि सरकार और समाज दोनों महिलाओं की सुरक्षा को लेकर उचित क़दम नहीं उठा पाई। लड़कियों, महिलाओं की इज़्ज़त के साथ रूह कंपकंपा देने वाले कांड करने वाले भी या तो बरी हो जाते हैं या कुछ समय की सजा काट कर छूट जाते हैं न समाज जिममेदारी लेता। न सरकार दोनों की बेरूखी को देखते हुवे खुद नारी को अब आत्म सुरक्षा के। सभी गुर सीखने होंगे पलटवार करना होगा, खुद की अस्मिता से जुड़े कानून कके बदलाव की माँग करनी होगी ऐसे कानून व धाराओं के लचीलेपन को नकारना होगा। संगठित होना होगा खुद कको कमजोर निर्बल समझना छोड़ना होगा।। कोई डर कोई भय स्त्री की ताकत से बड़ा। नहीं।

**संक्षिप्त परिचय :-**

आशा पाण्डे ओझा

जन्म स्थान: ओसियां( जोधपुर )

शिक्षा : एम .ए (हिंदी साहित्य) ,एल एल .बी जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)

प्रकाशित कृतियाँ :

1. दो बूंद समुद्र के नाम ( काव्य) 2. एक कोशिश रोशनी की ओर (काव्य )
3.त्रिसुगंधि (सम्पादन) 4 ज़र्रे-ज़र्रे में वो है (नज़्म ) 5 वक़्त की शाख से ( काव्य)

कई साझा संकलन

शीघ्र प्रकाश्य:

1. पाँखी (हाइकु संग्रह )
2 इस छोर से उस छोर तक

देश की विभिन्न पत्र -पत्रिकाओं व इ पत्रिकाओं में कविताएं ,मुक्तक ,ग़ज़ल, क़तआत , दोहा,हाइकु, सोरठा, माहिया,कहानी , व्यंग समीक्षा , आलेख , निबंध ,शोधपत्र , समीक्षा निरंतर प्रकाशित

सम्मान -पुरस्कार :- कवि तेज पुरस्कार जैसलमेर , राजकुमारी रत्नावती पुरस्कार जैसलमेर ,महाराजा कृष्णचन्द्र जैन स्मृति सम्मान एवं पुरस्कार

पूर्वोत्तर हिंदी अकादमी शिलांग (मेघालय ) साहित्य साधना समिति पाली एवं राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर द्वारा अभिनंदन , वीर दुर्गादास राठौड़, साहित्य सम्मान जोधपुर ,पांचवे अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विकास सम्मलेन ताशकंद में सहभागिता एवं सृजन श्री सम्मान,प्रेस मित्र क्लब बीकानेर

राजस्थान द्वारा अभिनंदन , मारवाड़ी युवा मंच श्रीगंगानगर राजस्थान द्वारा अभिनंदन , संत कवि

सुंदरदास राष्ट्रीय सम्मान समारोह समिति भीलवाड़ा राजस्थान द्वारा साहित्य श्री सम्मान ,सरस्वती सिंह स्मृति सम्मान पूर्वोत्तर हिंदी अकादमी शिलांग मेघालय , अंतराष्ट्रीय साहित्यकला मंच मुरादाबाद के सत्ताईसवें अंतराष्ट्रीय हिंदी विकास सम्मलेन काठमांडू नेपाल में सहभागिता एवं हरिशंकर पाण्डेय साहित्य भूषण,...

**बदली कितनी बस्तियाँ, बदले कितने फर्द।**
**लेकिन पीछे आ गया, पीछा करता दर्द।।**
**नारी सागर प्रेम का,पर्वत प्रण का ठोस।**
**दुनिया को ये पोषती, बनकर जीवन ओस।।**
**दरिया अपनी ज़िंदगी, साँसे लहर उत्ताल।**
**सुख दुख हैं जलचर प्रिये,रिश्ते सारे जाल।।**
**मैं सहरा की रेत थी, तू दरिया का नीर।**
**दोनो को ढोनी पड़ी ,अपनी अपनी पीर।।**

**उम्र सुराही में भरा जितना रब ने नीर ।**
**उतना पीकर चल पड़ा, आगे साँस फकीर ।।**
**सुन री आशा बावरी,मत कर कोई आस ।**
**जीवन यह बाजार है, सौदा अपनी साँस।।**
**जब तक मुझमे "मैं" रहा, दूर रहा भगवान ।**
**ज्यों ही मैंने "मैं" तजा,तुरत मिला वो आन।।**

राजस्थान साहित्यकार
परिषद कांकरोली राजस्थान द्वारा अभिनंदन ,श्री
नर्मदेश्वर सन्यास आश्रम
परमार्थ ट्रस्ट एवं सर्व धर्म मैत्री संघ अजमेर
राजस्थान के संयुक्त
तत्वावधान में अभी अभिनंदन , राष्ट्रीय साहित्य
कला एवं संस्कृति परिषद्
हल्दीघाटी द्वारा काव्य शिरोमणि सम्मान ,
राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर
एवं साहित्य साधना समिति पाली राजस्थान
द्वारा पुन: सितम्बर २०१३ में
अभिनंदन सलिला संस्था सलुम्बर द्वारा सलिला
साहित्य रत्न सम्मान 2014

**संपर्क : 07597199995**
**E mail I D asha09.pandey@gmail.com**
**ब्लॉग ashapandeyojha.b;ogspot.com**

## पुस्तक समीक्षा

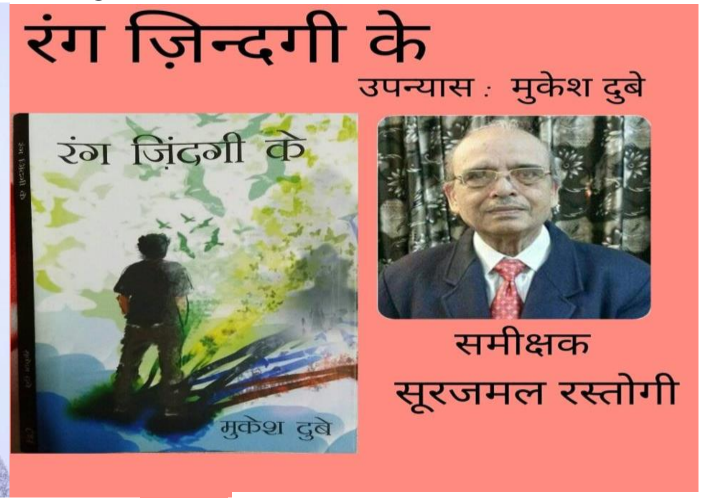


**मुकेश दुबे**

हिंदी साहित्य के क्षेत्र श्री मुकेश दुबे परिचय के मोहताज नहीं,वे अपनी साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से एक ऐसे स्थान पर आसीन हो गए है जहाँ हमे अपनी गर्दन को पीछे झुकाना पड़ेगा ऊपर देखने के लिए।आपकी रचनाएँ गद्य और पद्य दोनों विधाओं में जिस चाव से पढ़ी जाती हैं,सराहनीय है। लघु कथाएँ लिखने में भी वे सिद्धहस्त हैं। कड़ी धूप का सफर, कतरा कतरा ज़िन्दगी, फैसला अभी बाकी है और अन्नदाता जैसे श्रेष्ठ उपन्यास लिखकर अपनी विद्वता,दूरदर्शिता एवं मानवीय मूल्यों का प्रतिपादन कर साहित्य के क्षेत्र में जो गौरव प्राप्त किया है, अवर्णनीय है ।

एक कुशल रचनाकार के रूप में जिस तरह भावनाओं को अपनी तूलिका रूपी लेखनी से भिन्न भिन्न रंगों से चित्रित किया है अप्रतिम है, शलाघ्या से भी परे है।।

"रंग ज़िन्दगी के" नामक उपन्यास ज़िन्दगी के विभिन्न पहलुओं को चित्रित करता है। सम्पूर्ण उपन्यास में जो सबसे सुंदर रंग व्याप्त है वह है सादगी का रंग जैसे मुंशी प्रेमचंद का कोई उपन्यास पढ़ रहा हूँ। लेखक ने इस उपन्यास में एक रचनात्मक दृष्टिकोण अपनाया है। मध्य प्रदेश के खंडवा जिले के खकनार गाँव से प्रारंभ होती यह कहानी उत्तरोत्तर बढ़ती हुई दिल्ली जैसे भव्य नगर पर समाप्त होती है।

नायक अखिलेश खरे का जीवन शुरू होता है माँ की ममता से त्यक्त बालक जिसे मातृ वात्सल्य यदि मिला तो अपनी दादी से। मां गाँव मे डॉक्टर के अभाव में चल बसीं। वह बालक सोचता है वह डॉक्टर बनेगा। पिता का स्नेह उसके प्रति उपेक्षा से भर जाता है। वे उसे पुत्र के रूप में स्वीकार नहीं करते। इस घृणित भावना का शिकार होकर भी वह बालक अपने अध्ययन को उच्चतम वरीयता देकर बढ़ता रहता है। दादी ही उसका सम्बल है, वही प्रेरणा का स्रोत। वह फार्मेसिस्ट में डिप्लोमा प्राप्त कर एक अच्छी मेडिकल कंपनी का उच्चपद प्राप्त करता है। निरंतर प्रगति करता यह बालक निम्नमध्यमवर्गीय परिवार के बच्चों के लिए प्रेरणा का पुंज है। अपने अथक परिश्रम से वह दादी द्वारा पोषित स्वप्न को पूरा करने में पूर्ण रूप से समर्पित है। अध्ययन के क्षेत्र में झावेरी सेठ एक ईमानदार एवं सहृदयी व्यक्ति की भूमिका में बहूत प्रभाव शाली लगे। गांव छोड़ना,दादी के स्नेह से विमुक्त नायंक को दुखी

करता है लेकिन वह कहता है //रोने का अधिकार तो उसे है जिसके आंसू पोंछने वाला कोई हो // जान मिल्टन ने अपनी एक
कविता में लिखा है।।।ईश्वर भी उनकी मदद करता है जो अपनी मदद स्वयं करता है।।।। यही बात उसे शिखर पर ले जाती है।
आत्मकथ्यात्मक शैली में लिखा गया यह उपन्यास पाठकों को अंत तक जोड़े रखता है। एक ही बस स्टॉप से जाने वाली लड़की सुप्रिया को रोज देखने वाला नायक साहस नहीं जुटा पाता कि वह उससे परिचय प्राप्त करे। सुप्रिया की सादगी उसे प्रभावित करती है। वह सोंचता है, एक तो सीमित संसाधन, इस पर कुछ बनने की ललक ने मुझे अपने तक ही सीमित कर दिया था, मैं किसी के साथ रहकर भी नहीं रह पाता था। और परिचय का प्रारंभ जब सुप्रिया कहती है //जान पहचान कोई मलेरिया या वायरल तो है नहीं जो मच्छर के काटने या बैठने से हो वह तो खुद ही करनी होती है // नायक का सुप्रिया को अपने परिवार की आर्थिक स्थिति एवं विगत कई घटनाओं को स्पष्ट करना उसकी महान चारित्रिक विशेषता है। सच्चे स्नेह की यह पहली आवश्यकता है। अध्ययन के साथ एक जॉब का मिल जाना ,लेखक बताना चाहता है कि आर्थिक अभाव से निबटा जा सकता है यदि संकल्प है... "उद्यमेन हि सिध्यन्ति ,कार्याणि न मनोरथै"। अंग्रेजी में एक कहावत है // A man is his own star// अर्थात मनुष्य स्वयं अपने भाग्य का निर्माता होता है।
दादी के निधन की सूचना नायक के लियी सबसे दुखद है। नायक अपने गांव लौटता है और नई माँ व बहन को स्वीकारता है। वह कितना सहिष्णु है नियति की इस स्थिति से भी वह सेमझौता करता है। वह अपने पिता, नई माता एवं बहन को आपने साथ रखने का वचन देकर दिल्ली लौटता है। सुप्रिया के विवाह की सूचना उसे मिलती है। नियति यहाँ फिर उसकी परीक्षा लेती है लेकिन वह स्थिर रहता है अपने जॉब के प्रति समर्पित होकर। वह देवदास नहीं बनता। शैलजा उसे स्वयं प्रपोज करती है लेकिन वह स्थिर रहता है और यह स्थिति उसके अपने प्रथम स्नेह की गहराई को प्रदर्शित करती है।समय का चक्र कब रुका है। अपनी दो वर्ष की बेटी को छोड़ सुप्रिया के पति की एक दुर्घटना में मृत्यु हो जाती है। नायंक का पिता स्वयं अपने बेटे से सुप्रिया के साथ विवाह की स्वीकारोक्ति,समाज मे व्याप्त उस विसंगति को चुनौती देता लगता है जहां विधवा का पुनर्विवाह निषिद्ध है। वे अपने बेटे से कहते हैं // उसे छोड़ना नहीं है थामना है सदा के लिए // ये पंक्तियाँ निस्संदेह पाठक को झकझोरती हैं।
कथानक धाराप्रवाह है। उपन्यास के सभी पात्रों में एक सकारात्मक सोच है, एक रचनात्मकता है। कहानी एक लयबद्ध तरीके से लिखी गई है जो पाठक को पढ़ने के लिए विवश करती है।
उपन्यास जीवन के संघर्ष से जुड़ा है और यह संघर्ष ही जीवन का मार्ग प्रशस्त करता है।
शैली में रोचकता है। संवादों में अर्थपूर्ण अभिव्यक्ति है।भाषा जनमानस के जीवन जैसी।
कोई संदेह नहीं कि यह उपन्यास भी अन्य उपन्यासों की भांति सुधी पाठकों द्वारा अवश्य सराहा जाएगा जिसके लिए श्री मुकेश दुबे बधाई के पात्र हैं। //

**सूरज मल रस्तोगी**

~||अंतरा-शब्दशक्ति||~
मासिक वेब पत्रिका
अंक 1
जुलाई 2017
प्रवेशांक
~|| अंतरा-शब्दशक्ति ||~
मासिक वेब पत्रिका
अंक २
अगस्त २०१७
पावस विशेषांक
~|| अंतरा-शब्दशक्ति ||~
मासिक वेब पत्रिका
अंक 3
सितंबर 2017
~|| अंतरा-शब्दशक्ति ||~
मासिक वेब पत्रिका
अंक 4
अक्टूबर 2017
दीपावली विशेषांक
~|| अंतरा-शब्दशक्ति ||~
मासिक वेब पत्रिका
नवंबर 2017
अंक 5
अन्तराशब्दशक्ति
मासिक वेब पत्रिका
अंक 6
दिसंबर 2017